उत्तरी अमेरिका की लोक कथाएं–2

संकलन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Book Title: Uttaree America Ki Lok Kathayen-2 (Folktales of North America-2)
Cover Page picture: North America's Native Indians' Basket
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: http://sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Map of America

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

उत्तरी अमेरिका की लोक कथाऐं–2

संसार में सात महाद्वीप हैं – एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अन्टार्कटिका, यूरोप और आस्ट्रेलिया – सबसे बड़े से सबसे छोटा। जब तक पनामा कैनाल[1] नहीं बनी थी, यानी **1914** तक, उससे पहले से यानी जबसे इसे **1492** में कोलम्बस ने खोजा था तब तक उत्तरी अमेरिका और दक्षिणी अमेरिका धरती का एक ही टुकड़ा थे।

धरती के इन दोनों हिस्सों को, यानी उत्तरी अमेरिका को और दक्षिणी अमेरिका को, **15**वीं शताब्दी के अन्त में क्रिस्टोफर कोलम्बस को खोजने का श्रेय मिला। उससे पहले के जो धरती के नक्शे मिलते हैं उनमें इन दोनों महाद्वीपों का कहीं कोई नामो निशान भी नहीं मिलता। इनकी खोज के बाद यहाँ यूरोप के देशों से लोग आ कर बसना शुरू हो गये। तब तक भी उत्तरी अमेरिका और दक्षिणी अमेरिका दोनों एक ही महाद्वीप थे। इसके अलावा कैनेडा देश भी पहले उत्तरी अमेरिका में ही आता था। वह कोई अलग देश नहीं था।

अमेरिका या यू ऐस ए या स्टेट्स देश उत्तरी अमेरिका महाद्वीप में स्थित है। उत्तरी अमेरिका महाद्वीप में तीन बड़े मुख्य देश हैं – उत्तर में कैनेडा, दक्षिण में मेक्सिको और बीच में यू ऐस ए या अमेरिका। कुछ और छोटे छोटे देश भी हैं इसमें जो मैक्सिको के आस पास है।।

पर ऐसा नहीं है कि यूरोप के देशों के लोगों के आने से पहले यहाँ कोई रहता हीं नहीं था। यहाँ पर यहाँ के आदिवासी लोग रहते थे। उनकी अपनी संस्कृति थी, उनका अपना रहने सहने का ढंग था, उनके अपने तौर तरीके थे और थीं उनकी अपनी बहुत सारी लोक कथाऐं। विदेशियों के आने के बाद बहुत कुछ खत्म हो गया। पहले यहाँ कई जनजातियाँ रहती थी।

यहाँ मुख्य रूप से दो प्रकार की लोक कथाऐं पायी जाती हैं एक तो वे जो विदेशियों के आने से पहले के रहने वाले आदिवासियों या मूल निवासियों में प्रचलित थी और दूसरी वे जो विदेशी लोग अपने साथ ले कर आये। यूरोप तब तक काफी विकसित हो चुका था इसलिये उनकी लोक कथाऐं ज़्यादा अच्छी तरह से सुरक्षित हैं पर यहाँ के आदिवासियों की लोक कथाऐं बहुत ज़्यादा नहीं मिलती हैं। जो भी मिलती हैं उनको अब किसी तरह सुरक्षित किया जा रहा है।

आदिवासियों की लोक कथाओं में कुछ चरित्र बहुत मुख्य हैं – एक छोटा भेड़िया जिसके नाम कायोटी है, दूसरा एक कौआ जैसा पक्षी है जिसका नाम रैवन[2] है, तीसरा एक मकड़ा है जिसका नाम निहानकन है और चौथा एक ईकटोमी है। ईकटोमी भी मकड़े जैसा ही है। इनकी कथाऐं यहाँ बहुत सारी हैं इसलिये इनकी लोक कथाऐं अलग से ही दी गयी हैं।

---

[1] Panama Canal, 110 feet wide, 48 mile long canal, separates North America and South America continents and facilitates the transportation between Atlantic and Pacific oceans saving about 8,000 mile journey around the Cape Horn of South America. It took 10 years to be built, 1904-1914. It was opened to public in 1914.

[2] "Raven Ki Lok Kathayen-1", by Sushma Gupta. India, Indra Publishers. 2016.
"Raven Ki Lok Kathayen", by Sushma Gupta. Prabhat Prakashan. 2019

इस पुस्तक में उत्तरी अमेरिका की वे लोक कथाऐं दी जा रही हैं जो विदेशियों के आने से पहले के रहने वाले आदिवासियों की हैं और कायोटी, रैवन, निहानकन मकड़े और ईकटोमी से भी सम्बन्धित नहीं हैं। कौन सी लोक कथा किस जनजाति की है जहॉ इसका पता है वहॉ उसका नाम दे दिया गया है पर जहॉ उसका नाम नहीं मालूम है वहॉ यह नाम नहीं दिया जा सका। ये सब लोक कथाऐं अमेरिका की लोक कथाओं के नाम से दी जा रही हैं। इसके कैनेडा और मैक्सिको देशों की लोक कथाऐं अलग से दी हुई हैं। आशा है ये लोक कथाऐं आप सबके ज्ञान को बढ़ायेंगी और यह भी बतायेंगी कि उतने पुराने लोग किस तरह की कहानियॉ कहते सुनते थे।

अमेरिका की लोक कथाओं का पहला संकलन प्रकाशित किया जा चुका है। इस पुस्तक में हमने इन्टरनैट की कई वैब साइट से कई जनजातियों की लोक कथाऐं ली हैं। रेड इन्डियन्स की ये जनजातियॉ उत्तरी अमेरिका के उत्तरी पश्चिमी तट की ओर ज़्यादा रहती थीं – ऊपर अलास्का तक। क्योंकि पहले यू ऐस ए और कैनेडा दो अलग अलग देश नहीं थे इसलिये उधर की ये सब लोक कथाऐं "अमेरिका की लोक कथाऐं" के नाम से ही दी जा रही हैं। वैसे कैनेडा की लोक कथाऐं अलग से भी दी गयी हैं पर वे सब यूरोपियन लोगों के आने के बाद की कथाऐं हैं जो वे अपने अपने देशों से ले कर आये।

आशा है कि ये लोक कथाऐं तुम लोगों को पसन्द आयेंगी और आधुनिक समाजों से पहले समाजों के बारे में कुछ नया सिखायेंगी।

संसार के सात महाद्वीप
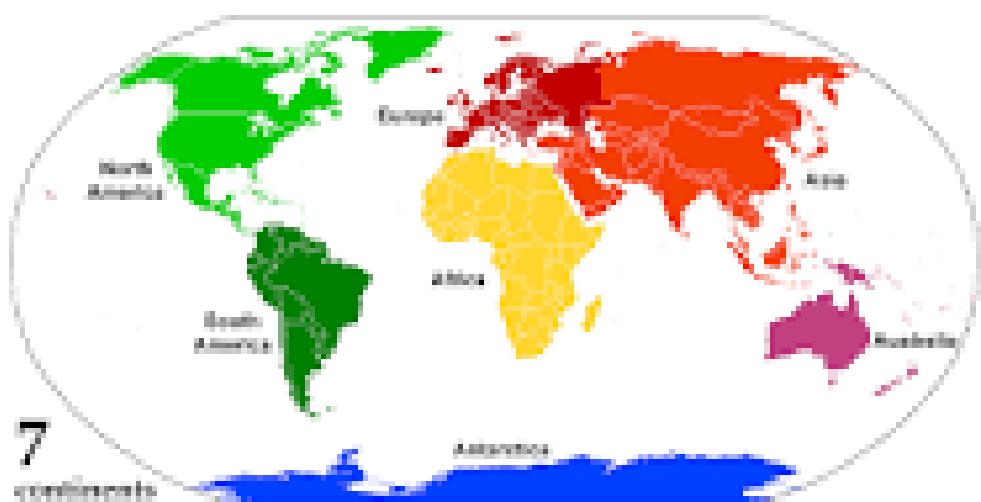
1 आलसी जैक[3]

यह बहुत पुरानी बात है कि एक बार एक लड़का था उसका नाम जैक था। वह अपनी माँ के साथ रहता था। इस कहानी में हमको यह नहीं मालूम कि उसके पिता को क्या हुआ था या वह कहाँ था पर वह अकेला ही अपनी माँ के साथ रहता था।

जैक ने अपनी ज़िन्दगी में कभी कोई काम नहीं किया था इसी लिये उसका नाम "आलसी जैक" पड़ गया।

एक दिन उसकी माँ ने उससे कहा "जैक अब तुम बड़े हो गये हो अब तुमको कुछ काम करना चाहिये।"

जैक बोला "काम? यह काम क्या होता है माँ?"

"इसको छोड़ो। तुम इस सड़क पर चले जाओ और कुछ दूर जाने पर तुमको एक किसान मिलेगा। जो भी वह किसान तुमको करने के लिये कहे वह कर दो।"

जैक बहुत ही अच्छा लड़का था सो माँ का कहना मान कर वह उस सड़क पर चल दिया। कुछ ही देर में वह किसान के पास पहुँच गया। किसान के पास पहुँच कर उसने सारे दिन उसका काम किया।

---

[3] Lazy Jack – a folktale from Native Americans, from Appalachian Tribe, North America.
Adapted rom the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=41
[Although this folktale is a well-known folktale from Britain but here Mike Lockett has assigned it to Native Americans too.]

उसने किसान का काम इतना अच्छा किया कि उसने उसके काम से खुश हो कर उसको मुट्ठी भर सिक्के दे दिये। जैक ने पहले कभी पैसे देखे नहीं थे सो उसको पता ही नहीं था कि उनका क्या करना है।

वह अपनी धुन में अपने घर चला जा रहा था। रास्ते में एक नाला पड़ता था। वह उसको पार करने के लिये उस नाले के ऊपर के पुल पर से गुजर रहा था।

उसने एक सिक्का हवा में उछाला तो वह तो नीचे बहते हुए नाले में गिर पड़ा। उसने दूसरा सिक्का उछाला तो वह पुल के तख्तों के बीच में जा कर फॅस गया। उसका तीसरा सिक्का एक कीचड़ के गडढे में जा पड़ा। और एक और सिक्का आगे जा कर मक्का के खेत में खो गया।

जब तक वह घर आया उसके सारे सिक्के कहीं न कहीं खो गये थे। उसकी मॉ ने जब उसे घर में देखा तो उससे पूछा — "जैक क्या तुम आज उस किसान के पास काम करने गये थे?"

"हॉ मॉ।"

"क्या उसने तुम्हें कुछ काम दिया?"

"हॉ मॉ आज मैं सारा दिन उसके पास कुछ न कुछ करता रहा।"

"क्या उसने तुम्हें उस काम के बदले में कुछ दिया?"

"हॉ दिया।"

"तो कहाँ है वह?"

"ओह वह?"

तब उसने उसे बताया कि रास्ते में क्या हुआ था। उसने उसके सिर पर एक हल्का सा चपत जमाया और बोली — "जैक तुमको तो ज़रा सी भी अक्ल नहीं है। थोड़ा सा तो अपना दिमाग इस्तेमाल किया होता। सारे लोग अपने दिमाग से काम करते हैं और तुम... ।

अगली बार जब तुम्हें अपने काम के बदले में कुछ मिले तो उसे अपनी जेब में रख कर लाना। कहाँ रख कर लाओगे?"

"अपनी जेब में।"

अगले दिन जैक ने एक दूध वाले के पास काम किया। उसने वहाँ सारा दिन गायों का दूध दुहा। फिर उसने उस दूध में से मक्खन निकाला।

शाम को जब उसका काम खत्म हो गया तो वह दूध वाला भी उसके काम से इतना खुश हुआ कि उसने उसको दो बहुत बड़ी मुट्ठी भर कर मक्खन दिया।

अब जैक तो बहुत ही अच्छा लड़का था वह अपनी माँ का कहना भी मानता था सो उसको याद रहा कि उसकी माँ ने उससे क्या कहा था। सो उसने वह सारा मक्खन कहाँ रख लिया? अपनी जेब में।

उस दिन दिन बहुत गर्म था और छोटी छोटी हरी मक्खियाँ चारों तरफ उड़ रही थीं। जब जैक घर की तरफ चला तो उसकी जेब में रखा वह मक्खन पिघलने लगा और टाँगों पर बहने लगा।

उसने उसको पहले अपने घुटने के पीछे, फिर टाँगों पर और फिर एड़ी पर बहते हुए महसूस किया। जब तक वह घर पहुँचा उसकी माँ को लगा कि उसका बेटा कुछ परेशान है।

उसने अपने बेटे से पूछा — "क्या तुम आज काम पर गये थे?"

"हाँ माँ।"

"क्या उसने तुम्हें तुम्हारे काम के बदले में कुछ दिया?"

"यकीनन माँ।"

माँ ने फिर पूछा "कहाँ है वह?"

"ओह वह?"

तब उसने माँ को बताया कि उस दिन उसके साथ क्या हुआ था। उसकी माँ ने फिर उसके सिर पर एक चपत लगाया और बोली "जैक तुम्हारे अन्दर ज़रा सी भी समझ नहीं है। अपने दिमाग से काम लो जैक अपने दिमाग से।

अगली बार जब तुमको ऐसी कोई मुलायम चीज़ मिले तो उसे तुम्हें किसी ठंडे पानी की बालटी में रख कर और उसे अपने सिर पर रख कर लाना चाहिये। कहाँ पर रख कर लाना चाहिये?"

"ठंडे पानी की बालटी में रख कर और फिर अपने सिर पर रख कर।"

अगले दिन जैक एक चूहे पकड़ने वाले के पास गया और वहाँ जा कर उसके पास सारा दिन काम किया। वहाँ वह सारा दिन उसके चूहे और चुहियें ही पकड़ता रहा। वह चूहे पकड़ने वाला उसके काम से इतना खुश हुआ कि शाम को उसने उसको टौम बिल्ला[4] दे दिया।

अब जैक तो बहुत ही अच्छा लड़का था वह अपनी माँ का कहना भी मानता था सो उसको याद रहा कि उसकी माँ ने उससे क्या कहा था।

सो उसने वह बिल्ला कहाँ रख लिया? एक ठंडे पानी की बालटी में और फिर अपने सिर के ऊपर।

बिल्ले को वह ठंडा पानी बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगा। उसने वहाँ बैठ कर चिल्लाना और थूकना शुरू कर दिया।

उधर जैक को रास्ते में कुत्तों का एक झुंड मिल गया। उन्होंने बिल्ले को देखा तो वे उस पर भौंकने लगे और उसको एक पहाड़ी की तरफ भगा दिया।

जैक जब घर लौटा तो उसके सारे शरीर पर खरोंचें पड़ी हुई थीं और उसका बिल्ला भी चला गया था।

माँ ने पूछा— "जैक क्या तुम आज काम पर गये थे?"

---

[4] Tom Cat

"यकीनन माँ।"

"तुमको अपने काम के बदले में कुछ मिला?"

"हाँ माँ।"

"तो कहाँ है वह?"

"ओह वह।"

और जैक ने फिर उसे सब कुछ बता दिया। उसकी माँ ने फिर उसके सिर पर एक चपत लगायी और बोली "जैक तुमको क्या हो गया है। तुम्हारे अन्दर ज़रा सी भी समझ नहीं है। अपने दिमाग से काम लो जैक अपने दिमाग से।

अगली बार जब तुमको ऐसी कोई चीज़ मिले तो उसे तुम्हें उसके गले में रस्सी बाँध कर और उसे अपने पीछे घसीटते हुए लाना चाहिये। कैसे लाना चाहिये?"

"गले में रस्सी बाँध कर और उसे अपने पीछे घसीटते हुए।"

अगले दिन जैक फिर काम करने गया तो उस दिन उसने सारा दिन एक कसाई की दूकान पर काम किया। सारा दिन वह उसकी गायें और तरह तरह के जानवर काटता रहा।

शाम तक उसने उसके यहाँ इतनी मेहनत से काम किया कि उस कसाई ने उसको उसके काम से खुश हो कर उसको सूअर की एक बहुत बड़ी हड्डी दी जिसके ऊपर बहुत सारा माँस लगा हुआ था।

अब जैक तो बहुत ही अच्छा लड़का था वह अपनी माँ का कहना भी मानता था सो उसको यह भी याद रहा कि उसकी माँ ने उससे क्या कहा था।

सो वह वह हड्डी कैसे लाया? उसमें रस्सी बाँध कर और उसे अपने पीछे घसीटते हुए। वह गुनगुनाता हुआ चला आ रहा था कि वह उस नाले के पुल पर एक कील के ऊपर आ गया।

उस कील से उस सूअर की हड्डी के ऊपर का थोड़ा सा माँस कट गया। जैक को पता भी नहीं चला।

अब वह मक्का के खेतों से हो कर गुजरा तो वहाँ बहुत सारी चींटियाँ थीं। माँस देख कर वे उस पर चिपट गयीं। उसने उनकी भी कोई चिन्ता नहीं की। फिर वह उस पहाड़ी के पास से गुजरा जहाँ उन कुत्तों ने उसका बिल्ला भगाया था।

वहाँ फिर उसके पास एक कुत्ता आ गया और उसने उस हड्डी को चबाना शुरू कर दिया। जब तक वह अपने घर पहुँचा उस कुत्ते ने उस हड्डी का सारा माँस खा लिया था।

माँ ने पूछा— "जैक क्या तुम आज काम पर गये थे?"

"यकीनन माँ।"

"तुमको अपने काम के बदले में कुछ मिला?"

"हाँ माँ।"

"तो कहाँ है वह?"

"ओह वह।" और जैक ने फिर उसे सब कुछ बता दिया।

उसकी माँ ने फिर उसके सिर पर एक चपत लगाया और बोली "जैक तुम्हारे अन्दर ज़रा सी भी समझ नहीं है। अपने दिमाग से काम लो जैक अपने दिमाग से।

अगली बार जब तुमको ऐसी कोई चीज़ मिले तो उसे तुम्हें अपनी पीठ पर रख कर लाना चाहिये। कैसे लाना चाहिये?"

"अपनी पीठ पर रख कर।"

जैक अगले दिन फिर काम करने गया। इस बार वह एक लोहार के पास काम करने गया। वहाँ सारे दिन वह उसके गधों और घोड़ों के खुरों पर नाल[5] लगाता रहा।

शाम तक उसने इतना अच्छा काम किया कि उसके काम से खुश हो कर उस लोहार ने उसको एक गधा ही दे दिया।

अब जैक तो बहुत ही अच्छा लड़का था वह अपनी माँ का कहना भी मानता था सो उसको याद रहा कि उसकी माँ ने उससे क्या कहा था।

सो वह वह गधा कैसे लाया? उसको अपनी पीठ पर रख कर। उसने उसकी एक सामने वाली टाँग अपने एक कन्धे पर रखी और दूसरी टाँग दूसरे कन्धे पर। इस तरह जब वह उस गधे को अपनी पीठ पर रख कर ला रहा तो वह बड़ा अजीब लग रहा था।

[5] Translated for the words "Putting shoes on horses and donkeys"

जैक के घर के पास ही एक राजा रहता था। इस राजा की एक बेटी थी जो बहुत उदास रहती थी। सारा दिन वह उदास ही रहती थी। वह कभी मुस्कुरायी भी नहीं और कभी हँसी भी नहीं।

और जहाँ तक मेरा ख्याल है कि यह सभी जानते हैं कि अगर कोई मुस्कुराता नहीं ओर हँसता नहीं तो वह बदसूरत हो जाता है।

राजा ने अपने सारे राज्य में यह घोषणा करवा रखी थी कि जो कोई उसकी बेटी को हँसा देगा उससे वह अपनी बेटी की शादी कर देगा।

पर लोगों का कहना था कि वह तो इतनी बदसूरत लगती थी कि वे उससे शादी करना तो दूर उसको छूना तक पसन्द नहीं करेंगे।

यह सुनने के बाद राजा ने फिर दोबारा यह घोषणा करवायी कि जो कोई उसकी बेटी को हँसायेगा वह उससे अपनी बेटी की शादी तो कर ही देगा साथ में उसको अपना आधा पैसा भी दे देगा।

यह सुन कर लोगों ने कहा कि चलो वह बदसूरत है तो है पर साथ में अमीर भी तो है सो वे कोशिश कर के देखेंगे। हर किसी ने बहुत कोशिश की पर कोई उसके चेहरे पर मुस्कान भी न ला सका उसको हँसाना तो दूर।

जिस दिन जैक गधे को अपनी पीठ पर रख कर घर ले जा रहा था उस दिन भी राजा की बेटी अपनी खिड़की में उदास बैठी बाहर देख रही थी।

जैसे ही उसने जैक को इस तरह जाते देखा तो वह अपनी जगह से उठ कर खड़ी हो गयी और हॅसने लगी।

उसने वहीं से अपने पिता को पुकार कर कहा — "ओह पिता जी ज़रा यहॉ आ कर देखिये तो।"

जब राजा ने अपनी बेटी हॅसी सुनी तो उसको लगा कि उसको वह घोषणा कभी नहीं करनी चाहिये थी कि वह अपना आधा पैसा भी अपने दामाद[6] को दे देगा।

लेकिन वायदा तो वायदा ही होता है खास कर के जब जबकि वह किसी राजा ने किया हो। सो राजा ने अपना एक नौकर जैक से बात करने के लिये भेजा।

नौकर ने जैक से कहा — "तुमको राजकुमारी से शादी करनी पड़ेगी।"

जैक बोला "पर वह तो बदसूरत है। मैं उससे शादी कैसे कर सकता हूॅ?"

नौकर बोला "पर तुमको साथ में राजा का आधा पैसा भी तो मिलेगा।"

जैक बोला "ठीक है।" और उसने उसे शादी कराने वाले को और अपनी मॉ को लाने के लिये भेज दिया।

शादी कराने वाले ने जैक से पूछा "क्या तुम इसको अपनी पत्नी स्वीकार करते हो?"

[6] Translated for the word "Son-in-law" – means daughter's husband

जैक ने उस लड़की की तरफ देखा और "न" कहने ही वाला था कि उसको राजा के आधे पैसे का ख्याल आ गया और उसने "हाँ" कर दी।

शादी कराने वाले ने राजकुमारी से पूछा "क्या तुम इसको अपना पति स्वीकार करती हो?"

"हाँ यकीनन।" और यह कह कर वह फिर बहुत ज़ोर से हँस पड़ी।

जैक ने जब उसकी वह अजीब सी हँसी सुनी तो उसने सोचा कि काश उसने उससे शादी के लिये कभी हाँ न की होती। पर अब तो देर हो चुकी थी। अब तो दोनों ने हाँ कह दी थी। दोनों की शादी हो गयी।

जैक शायद उसको प्यार करने लगता अगर वह इतने अजीब तरीके से न हँसती। पर वह उसके पैसे को प्यार करता था। और अब उसके पास क्योंकि बहुत पैसा था उसको फिर से कभी कोई काम नहीं करना पड़ा।

और इसी वजह से उसकी इस कहानी का नाम "आलसी जैक" पड़ गया।

2 साबुन साबुन साबुन[7]

यह बहुत पुरानी बात है कि एक बार एक लड़का था उसका नाम जैक था। वह बहुत ही भुलक्कड़ था। उसको कुछ याद ही नहीं रहता था।

एक दिन उसकी माँ को कुछ कपड़े धोने थे। उसके पास कपड़े धोने के लिये पत्थर था और उसने कुँए से पानी भी खींच लिया था। उसने उस पानी से तीन चौथाई बैरल भी भर लिया था। पर तभी उसने देखा कि उन कपड़ों को धोने के लिये उसके पास साबुन तो बहुत कम था।

सो उसने जैक को आवाज दी और कहा — "बेटा ज़रा दूकान जा कर थोड़ा कपड़े धोने का साबुन तो ले आओ।"

उसको मालूम था कि उसका बेटा भुलक्कड़ है सो उसने उससे कहा कि वह बार बार साबुन साबुन दोहराता हुआ बाजार जाये ताकि वह भूले नहीं कि उसको बाजार से क्या लाना है।

जैक यह सुन कर साबुन साबुन दोहराता हुआ बाजार चल दिया। उस दिन तभी तभी बारिश पड़ कर चुकी थी सो सब जगह कीचड़ हो रही थी। जब वह बाजार जा रहा था तो वह गीली मिट्टी में फिसल गया।

---

[7] Soap, Soap, Soap – a folktale from Native Americans, from Appalachian Tribe, North America. Adapted rom the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=27

उठ कर उसने आपको पोंछा और फिर आगे चल दिया। जब वह वहॉ से चला तो वह भूल गया कि वह दूकान क्या लाने के लिये जा रहा था।

सो वह फिर वहीं वापस आया जहॉ वह गिरा था और बोला “यहॉ तक तो मुझे याद था और यहॉ के बाद मैं भूल गया। यहॉ तक तो मुझे याद था और यहॉ के बाद मैं भूल गया।”

एक बूढ़ा जैक के दूसरी तरफ से अपनी बिब वाली पैन्ट पहन कर उसी की तरफ चला आ रहा था। वह जैक को इधर से उधर घूमते हुए देख कर रुक गया और उससे पूछा कि यह तुम क्या कह रहे हो कि तुम्हारे पास यहॉ क्या था और फिर यहॉ के बाद क्या खो गया।

वह उससे बार बार यही पूछता रहा पर जैक कुछ भी जवाब नहीं दे सका सिवाय इसके कि “यहॉ तक तो मुझे याद था और यहॉ के बाद मैं भूल गया। यहॉ तक तो मुझे याद था और यहॉ के बाद मैं भूल गया।”

जैसे ही वह बूढ़ा जैक के पास तक आया तो वह भी उसी जगह फिसल कर अपने पिछवाड़े के बल गिर पड़ा। इससे वह बूढ़ा इतना गुस्सा हो गया कि उसने जैक को ज़ोर से झकझोरते हुए कहा — “तुमको बोलना चाहिये “मुझे अफसोस है कि यह मैंने किया। अब मैं आगे से ऐसा कभी नहीं करूँगा।”

जैक बोला — "मुझे अफसोस है कि यह मैंने किया। अब मैं आगे से नहीं करूँगा। मुझे अफसोस है कि यह मैंने किया। अब मैं आगे से ऐसा कभी नहीं करूँगा।"

अब वह यह बार बार कहता हुआ आगे चल दिया कि "मुझे अफसोस है कि यह मैंने किया। अब मैं आगे से ऐसा कभी नहीं करूँगा। मुझे अफसोस है कि यह मैंने किया। अब मैं आगे से ऐसा कभी नहीं करूँगा।"

यह कहते हुए वह आगे चलता जा रहा था कि उसको एक स्त्री मिली जिसको किसी ने दूकान से घर जाते समय धक्का मार दिया था। वह इससे इतनी गुस्सा थी कि वह यह जानना चाहती थी उसे किसने धक्का मारा।

कि तभी जैक उसके सामने आ गया। वह अभी भी यही दोहराता जा रहा था "मुझे अफसोस है कि यह मैंने किया। अब मैं आगे से ऐसा कभी नहीं करूँगा। मुझे अफसोस है कि यह मैंने किया। अब मैं आगे से ऐसा कभी नहीं करूँगा।"

उस स्त्री ने समझा कि यही वह आदमी है जिसने उस धक्का मारा था सो उसने उसको बाँह से पकड़ लिया और बिना सोचे समझे कि वह क्या कर रही है उसको कीचड़ में गिरा दिया।

फिर वह बोली — "तू अबसे यह बोल "अब मैं बाहर और तू अन्दर।" कह कर उसने अपना राशन वहीं कीचड़ में छोड़ा और अपने रास्ते चल दी।

जैक भी उस कीचड़ में से उठा और फिर वही कहता हुआ आगे चल दिया जो उस स्त्री ने कहा था "अब मैं बाहर और तू अन्दर।"

पर जब वह दूकान की तरफ जा रहा था तो उसको एक और बूढ़ा मिला जो एक पुरानी दो पहियों की गाड़ी को धक्का दे कर ले जा रहा था।

उसके दो पहियों में से एक पहिया कीचड़ में फॅस गया था कि उसी समय जैक यह कहता हुआ उसके सामने आ गया "अब मैं बाहर और तू अन्दर। अब मैं बाहर और तू अन्दर।"

उस बूढ़े ने सोचा कि शायद वह लड़का यह उसी से कह रहा था तो यह सुन कर वह बहुत गुस्सा हुआ और उससे बोला — "तुमको यह नहीं कहना चाहिये कि "अब मैं बाहर और तू अन्दर।" बल्कि यह कहना चाहिये "एक तो बाहर है दूसरे को भी बाहर निकालो।"

और यही जैक ने किया। वह दूकान तक फिर यही कहता चला गया "एक तो बाहर है दूसरे को भी बाहर निकालो। एक तो बाहर है दूसरे को भी बाहर निकालो।"

अब वह बस यही कहता चला जा रहा था "एक तो बाहर है दूसरे को भी बाहर निकालो। एक तो बाहर है दूसरे को भी बाहर निकालो।" कि इत्तफाक से उसको एक ऐसी स्त्री आती दिखायी दी जिसके एक ही ऑख थी।

जैसे ही उसने जैक को यह कहते सुना "एक तो बाहर है दूसरे को भी बाहर निकालो।" तो वह तो बहुत ज़ोर से गुस्सा हो गयी। वह जैक के सामने आती हुई बोली — "तुम यह कह कर कोई तरीके की बात नहीं कर रहे हो। तुमको तो यह कहना चाहिये "चलो एक है तो वही ठीक है।"

सो जैक फिर यही दोहराता दूकान की तरफ चल दिया "चलो एक है तो वही ठीक है। चलो एक है तो वही ठीक है।"

अब अगर बात यहीं तक रहती तब तक भी ठीक था पर इसके बाद भी उसको याद नहीं आया कि वह दूकान किसलिये जा रहा था।

पर जब वह यह कहते हुए जा रहा था तो उसको एक नाला पार करना था। यह नाला उस दूकान के पास ही था जिस दूकान पर वह जा रहा था। अब ऐसा हुआ कि दो लड़के उस नाले के पुल की रेलिंग से खेल रहे थे।

तुम्हारा अन्दाज ठीक निकला। उनमें से एक लड़का उस नाले में गिर पड़ा और तभी जैक यह दोहराता हुआ वहॉ आ पहुॅचा "चलो एक है तो वही ठीक है।"

इत्तफाक से उन लडकों की मॉ भी वहीं थी वह अपने बच्चे की सहायता करना चाह रही थी कि उसने जैक को यह कहते सुना "चलो एक है तो वही ठीक है। चलो एक है तो वही ठीक है।"

वह उससे यह कहने ही वाली थी कि "तुमको यह कहना चाहिये।" पर उसने देखा कि वह तो इतने समय तक कीचड़ में सना हुआ कितना गन्दा लग रहा था। उसको तो इस समय नहाने की जरूरत थी।

सो वह बोली — "तुम तो बहुत गन्दे हो रहे हो तुमको तो नहाने की जरूरत है। ध्यान रखना साबुन अच्छी तरह से लगा कर नहाना।"

जैक बोला — "साबुन साबुन साबुन।"

बस उसके पास ही दूकान थी सो वह साबुन साबुन कहता कहता दूकान में चला गया और वहाँ से साबुन खरीद कर घर वापस आ गया। आ कर उसने साबुन अपनी माँ को दिया।

फिर वह खुद भी बहुत सारा साबुन लगा कर नहाया धोया और उसकी माँ ने भी अपने कपड़े धोये।

पर उसकी माँ तो यह सोचती ही रह गयी कि जैक को कैसे याद रहा कि उसको क्या लाना था।

3 गनी भेड़िया[8]

एक बार एक बहुत छोटी लड़की थी वह अपनी मॉ के साथ एक जंगल के किनारे एक छोटे से लकड़ी के मकान[9] में रहती थी।

उनके घर के पास ही एक छोटा सा बागीचा था और एक छोटा सा कम्पाउंड था जिसके चारों तरफ एक सफेद बाड़ लगी हुई थी।

इनके अलावा वहीं जंगल में एक बहुत ही भयानक भेड़िया भी रहता था। यह भेड़िया कभी जंगल से बाहर नहीं निकला था। इस भेड़िये का नाम था गनी।

इस छोटी लड़की की मॉ हमेशा यही कहा करती थी "तुम यहॉ कुछ भी करो पर कभी जंगल में मत जाना। तुम जंगल से बच कर ही रहना तो तुम सुरक्षित रहोगी।" और यह छोटी लड़की अपनी मॉ से हमेशा वायदा करती कि वह जंगल में कभी नहीं जायेगी।

पर एक दिन जैसे ही उसकी मॉ घर से बाहर गयी तो उसने घर सजाने के लिये जंगल में फूल चुनने जाने का सोचा।

पहले फूल पीले रंग के फूल थे जो उसके घर की बाड़ और उसके बागीचे के बराबर में ही लगे हुए थे और सारे साल आते थे। उसने पहले वे पीले फूल तोड़े।

[8] Gunny Wolf – a folktale from Native Americans, from Appalachian Tribe, North America. Adapted rom the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=27

[9] Translated for the word "Cabin". See its picture above.

जब उसने वे पीले फूल तोड़ लिये तो उसको सुन्दर नीले रंग के फूल दिखायी दे गये। ये नीले फूल जंगल के किनारे पर ही लगे हुए थे। ये नीले फूल उसको इतने सुन्दर लगे कि वह अपना वायदा भूल गयी कि उसको जंगल की तरफ नहीं जाना था।

वह जंगल की तरफ चल दी जहाँ वे नीले फूल उगे हुए थे और वे नीले फूल तोड़ने लगी। जब वह ये नीले फूल तोड़ रही थी तो एक गीत भी गाती जा रही थी — "कुम–क्वा–खी–वा। कुम–क्वा–खी–वा।"

जब उसने नीले फूल तोड़ लिये तो उसको कुछ सुन्दर सफेद फूल दिखायी दे गये। वे पीले और नीले फूलों के साथ गुलदस्ते में सजे कितने सुन्दर लगते।

उसने सोचा कि उसकी माँ तो जब घर आयेगी तो इनको देख कर कितनी खुश होगी। सो उसको थोड़े से वे फूल भी चुन लेने चाहिये।

ये फूल जंगल में कुछ अन्दर जा कर लगे हुए थे पर वह छोटी लड़की अभी भी वहाँ से अपना घर देख सकती थी। उसने सोचा कि वह वहाँ ज़्यादा देर नहीं रुकेगी। बस फूल तोड़ेगी और वहाँ से चली आयेगी। उसको गनी भेड़िये की कोई चिन्ता नहीं थी।

सो वह उस जगह चल दी जहाँ वे सफेद फूल लगे हुए थे और उन्हें तोड़ने लगी। वह जब उनको तोड़ रही थी उसने फिर गाया — "कुम–क्वा–खी–वा। कुम–क्वा–खी–वा।"

जब उसने सफेद फूल तोड़ लिये तो उसको लाल रंग के फूल दिखायी दे गये। वे जंगल में और थोड़ा अन्दर जा कर थे। अगर वह वहाँ तक चली जाती तो फिर वहाँ से वह अपना घर नहीं देख सकती थी।

उसने सोचा कि वह वहाँ भी ज़्यादा देर नहीं रुकेगी। बस फूल तोड़ेगी और वापस आ जायेगी। उसको गनी भेड़िये की तो कोई चिन्ता ही नहीं थी सो वह उधर चल दी जहाँ वे लाल फूल लगे हुए थे। जब वह वे फूल तोड़ रही थी तो उसने फिर गाया — "कुम-क्वा-खी-वा। कुम-क्वा-खी-वा।"

जैसे ही लड़की ने अपना आखिरी लाल फूल तोड़ा कि पता नहीं कहाँ से एक बहुत ही खूँख्वार भेड़िया उसके सामने आ खड़ा हुआ।

वह भेड़िया उस लड़की से बोला — "ओ छोटी लड़की तुम अपना यह मीठा गीत फिर से गाओ न।"

सो लड़की ने उस गीत को फिर से गाया — "कुम-क्वा-खी-वा। कुम-क्वा-खी-वा।"

गाना सुनते सुनते गनी भेड़िये ने अपनी आँखें बन्द कर लीं और होठों पर अपनी जबान फेरने लगा। फिर उसने अपनी लम्बी नाक अपने पंजों पर रख ली और सो गया।

जब लड़की ने देखा कि गनी भेड़िया सो गया तो वह तुरन्त ही अपने घर की तरफ भाग ली – पटा पट पटा पट।

पर उसके भागने की आवाज सुनते ही तुरन्त ही गनी भेड़िया भी उठ गया और हंकाच हंकाच की आवाज करते हुए उस लड़की के पीछे भाग लिया और उसको पकड़ लिया।

वह चिल्लाया — "ओ छोटी लड़की, तुम वहॉ से भागी क्यों?"

लड़की बोली — "मैं भागी नहीं थी।"

"तो फिर वह मीठा गीत फिर से गाओ न।"

सो उस छोटी लड़की ने वह गीत फिर से गाना शुरू कर दिया — "कुम–क्वा–खी–वा। कुम–क्वा–खी–वा।"

जैसे ही उसने यह गीत गाना शुरू किया तो उस भेड़िये ने फिर से अपनी ऑखें बन्द कर लीं, फिर से अपने होठों पर ज़बान फेरी, फिर से अपनी लम्बी नाक अपने पंजों पर रखी और सो गया।

जब उस छोटी लड़की ने उसे फिर से सोते हुए देखा तो वह फिर अपने घर की तरफ भाग ली – पटा पट पटा पट।

उसके भागने की आवाज सुन कर वह गनी भेड़िया फिर से जाग गया और हंकाच हंकाच की आवाज के साथ उसका पीछा किया और उसको पकड़ लिया और बोला — "ओ छोटी लड़की तुम वहॉ से भागी क्यों?"

लड़की ने फिर वही जवाब दिया — "मैं वहॉ से भागी नहीं।"

"तो फिर वह मीठा गाना फिर से गाओ न।"

सो उस लड़की ने वही गाना फिर से गाना शुरू कर दिया — "कुम–क्वा–खी–वा। कुम–क्वा–खी–वा।"

इस बार फिर वैसा ही हुआ।

जैसे ही उसने यह गीत गाना शुरू किया तो उस भेड़िये ने फिर से अपनी आँखें बन्द कर लीं, फिर से अपने होठों पर ज़बान फेरी, फिर से अपनी लम्बी नाक अपने पंजों पर रखी और सो गया।

अबकी बार जब उस छोटी लड़की ने उसे फिर से सोते हुए देखा तो वह फिर अपने घर की तरफ भाग ली।

पटा पट पटा पट पहले उसने लाल फूल पार किये
पटा पट पटा पट फिर उसने नीले फूल पार किये
पटा पट पटा पट फिर उसने सफेद फूल पार किये
पटा पट पटा पट फिर जंगल से बाहर निकली
पटा पट पटा पट फिर वह अपने दरवाजे में घुसी
पटा पट पटा पट और बस फिर वह अपने घर में घुस गयी।

घर में घुस कर उसने ज़ोर से दरवाजा बन्द किया और फिर वह जंगल में अकेली कभी नहीं गयी।

4 यात्रा वाली केक जो भाग गयी[10]

बहुत जल्दी ही डेनियल बून ने अपालाचियन पहाड़ में कुम्बरलैंड दर्रा[11] ढूँढ लिया और वहाँ बसने वाले पश्चिम की दूसरी जमीनों पर बसने के लिये चल दिये जो बाद में कैन्टकी और टैनैसी[12] जगहें बन गयीं।

उस समय उनका प्रिय खाना यात्रा की केक[13] हुआ करती थीं जिनको वे आटे में अंडा और दूध मिला कर बनाते थे। उनमें वे थोड़ा सा नमक भी डालते थे।

वे आज हम जैसी पैनकेक[14] खाते हैं देखने में वैसी ही लगती थीं। बस वे मीठे शहद या रस से नहीं खायी जाती थीं। नहीं नहीं, वे गाढ़े शीरे से ही ढकी रहती थीं और मुस्कुराहट के साथ खायी जाती थीं।

ये यात्रा वाली केक लोहे के तवे पर कोयले की आग पर बनायी जाती थीं जो रात को बच जाती थी। सुबह को इनका गर्म गर्म नाश्ता भी किया जाता था।

---

[10] Journeycake Who Ran Away – a folktale from Native Americans, from Appalachian Tribe, North America. Adapted rom the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=30

[11] Not too long after Daniel Boone discovered the Cumberland Gap in Appalachian Mountains.

[12] Kentuckey and Tennesse are the states of the USA in the South-Eastern side of the country

[13] Translated for the word “Journeycake”

[14] Pancake is flat thick very small Dosa type made with white flour, milk, egg and baking powder. It is eaten with butter, or honey or some kind of syrup. See its picture above.

एक दिन एक माँ ने मैदान में जलती आग पर अपने चार बच्चों के लिये एक बहुत बड़ी सी यात्रा की केक बनायी। उसने उस केक के लिये बिल्कुल ठीक नाप का छना हुआ आटा लिया।

फिर उसने ठीक से नाप कर मीठा दूध डाला जो उसकी गाड़ी से बँधी गाय का था। फिर उसने उसमें एक अंडा मिलाया जो उसके परिवार की एक मुर्गी का था। ये मुर्गियाँ उस गाड़ी के साथ बँधे एक पिंजरे में बन्द थीं।

फिर उसने उसमें एक चुटकी खाने वाला सोडा मिलाया ताकि वह जब गर्म तवे पर पड़े तो जल्दी से गाढ़ा हो जाये। और फिर नमक के डिब्बे से एक चुटकी नमक मिलाया।

जब वह घोल एक तरफ से सिक गया तो उसने उसके ऊपर दो जंगली ब्लूबैरी रख दीं जिससे वे उसकी दो आखें लगने लगीं। एक ब्लूबैरी उसने उसके केक के बीच में रख दी। उसको उसने चम्मच से दबा कर उसकी नाक बना दी।

उसके नीचे उसने कई ब्लूबैरीज़ एक कमान की शक्ल में बना दी और वह उसकी मुस्कान बन गयी।

उसके बाद उसने कलछी से उसको धीरे से पलट दिया ताकि वह दूसरी तरफ से भी सिक जाये।

अब यह यात्रा की केक इतनी अच्छी सुगन्ध दे रही थी और देखने में भी इतनी स्वादिष्ट लग रही थी कि चारों बच्चे आपस में यह सोचने लगे कि उसका पहला कौर कौन खायेगा।

जब माँ यह इन्तजार कर रही थी कि वह केक कब सिकेगा और फिर कब उसे वह प्लेट में रखेगी तो उसने जो केक के ऊपर चेहरा बनाया था वह बच्चों को देखने में कुछ अजीब सा लगा।

वह यात्रा वाली केक बच्चों की सब बातें सुन रही थी। वह नहीं चाहती थी कि उसको कोई खाये सो जैसे ही वह दोनों तरफ से सिक गयी वह उस तवे पर से कूद गयी और लुढ़कने लगी।

माँ और बच्चे चिल्लाये — "रुक जाओ। हम तुमको खाना चाहते हैं।" पर वह तो रुकी ही नहीं तो माँ और बच्चे उसके पीछे भागे। पर वह केक तो और ज़्यादा तेज़ भागने लगी।

भागते भागते वह एक भूखे किसान के पास से गुजरी तो किसान भी बोला — "रुक जाओ मैं तुमको खाना चाहता हूँ।"

केक चिल्लायी "नहीं नहीं। मैं तो माँ और उसके चार भूखे बच्चो से भी भागी और मैं तुमसे भी भाग सकती हूँ।"

वह सड़क पर भागी जा रही थी और उसके पीछे पीछे भागे जा रहे थे माँ, उसके चार बच्चे और वह भूखा किसान।

वह सड़क पर भागती जा रही थी कि उसको एक बड़ी कत्थई रंग की मुर्गी मिली। वह बड़ी कत्थई रंग की मुर्गी बोली — "रुक जाओ ओ यात्रा वाली केक मैं तुमको खाना चाहती हूँ।"

यात्रा वाली केक चिल्लायी "नहीं नहीं। मैं तो माँ और उसके चार भूखे बच्चों से भागी। मैं तो भूखे किसान से भी भागी। मैं तो तुमसे भी भाग सकती हूँ।" कहते हुए वह केक फिर भाग ली।

आगे चल कर उसको एक बड़ी धब्बों वाली गाय मिली। उसको देख कर वह भी चिल्लायी — "रुक जाओ ओ यात्रा वाली केक मैं तुमको खाना चाहती हूँ।"

केक बोली "नहीं नहीं। मैं तो माँ और उसके चार भूखे बच्चों से भागी। मैं तो भूखे किसान से भागी। मैं तो बड़ी कत्थई मुर्गी से भी भागी। मैं तो तुमसे भी भाग सकती हूँ।" कहते हुए वह केक फिर भाग ली।

भागते भागते उसको एक छोटी सी पीली बतख[15] मिली तो वह भी बोली — "रुक जाओ मैं तुमको खाना चाहती हू।"

केक बोली "नहीं नहीं। मैं तो माँ और उसके चार भूखे बच्चों से भागी। मैं तो भूखे किसान से भी भागी। मैं तो बड़ी कत्थई मुर्गी से भी भागी। मैं तो बड़े धब्बों वाली गाय से भी भागी तो मैं तो तुमसे भी भाग सकती हूँ।" कहते हुए वह केक फिर भाग ली।

भागते भागते उसको फिर एक बड़ी बतख[16] मिली तो वह भी बोली — "रुक जाओ मैं तुमको खाना चाहती हू।"

[15] Translated for the word "Duck"

[16] Translated for the word "Goose"

केक बोली "नहीं नहीं। मैं तो मॉ और उसके चार भूखे बच्चों से भागी। मैं तो भूखे किसान से भी भागी। मैं तो बड़ी कत्थई मुर्गी से भी भागी। मैं तो बड़ी धब्बों वाली गाय से भी भागी। मैं तो छोटी पीली बतख से भी भाग ली तो मैं तो तुमसे भी भाग सकती हूॅ।" कहते हुए वह केक फिर भाग ली।

भागते भागते वह एक नदी के पास आयी तो वहॉ उसको एक सूअर मिला। पर वह सूअर उसके साथ दोस्ती का सा गर्दन करते हुए बोला — "आओ तुम मेरी थूथनी पर बैठ जाओ तो मैं तुमको इस चौड़ी नदी के पार उतरा दूॅगा।"

यात्रा वाली केक भागते भागते अब तक सबसे परेशान हो चुकी थी सो वह सूअर की थूथनी पर बैठने के लिये राजी हो गयी।

सूअर उसको अपनी थूथनी पर बिठा कर नदी के उस पार ले जाने लगा। वह उसको पानी में उतनी दूर तक ले गया जहॉ से वह केक कूद कर किनारे पर नहीं आ सकती थी।

बस जैसे ही वह वहॉ पहॅुचा उसने वहॉ पहॅुच कर अपना सिर थोड़ा सा पीछे को हिलाया और उस केक को एक ही कौर में खा गया।

और बस यही उस यात्रा वाली केक का अन्त था।

5 आदमी आग का मालिक कैसे बना[17]

बहुत पुराने समय में भालू एक बहुत ही ताकतवर जानवर था। वह बहुत होशियार था। वह बहुत मजबूत था। उस समय केवल वही आग का मालिक था क्योंकि केवल वही जानता था कि आग कैसे जलायी जाती है। वह उसको हमेशा जलाये रखता था ताकि वह बुझे नहीं।

आग से उसकी गुफा सूखी और चमकीली रहती थी। इसके अलावा वह दूसरे जानवरों को उससे दूर भी रखती थी क्योंकि वे सब आग से डरते थे।

एक बार भालू अपनी गुफा में ऐसे ही बैठा हुआ था कि उसको कहीं से किसी चीज़ की खुशबू आयी। उसने हवा में कुछ सूँघा। पहले उसने एक बार सूँघा। फिर उसने दोबारा सूँघा। फिर उसने तीसरी बार सूँघा फिर वह अपने गुफा के दरवाजे पर गया।

वहाँ जा कर उसको रसभरी की खुशबू आयी। भालू को रसभरी बहुत अच्छी लगती थीं सो वह अपनी गुफा छोड़ कर रसभरी की तलाश में चल दिया।

उसकी आग उसकी गुफा में पत्थरों के एक गोले के अन्दर जल रही थी। वह वहाँ जलती रही।

---

[17] How Man Became Master of Fire – a folktale from Native Americans, North America. Adapted rom the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=168

अब भालू वहॉ से चला तो गया पर वह अपनी आग में और लकड़ियॉ डालना भूल गया ताकि वह बुझ न जाये।

वह उधर ही चल दिया जिधर से उसे ख़ुशबू आ रही थी। जल्दी ही वह रसभरियों के पास पहुॅच गया और वहॉ जा कर रसभरियॉ खाने लगा।

रसभरियॉ इतनी अच्छी थीं कि बस वह तो उनको खाने में लग गया और आग के बारे में बिल्कुल ही भूल गया।

आग चिल्लायी — "मुझे खाना चाहिये। मुझे भूख लगी है मुझे खाना खिलाओ। ओ भालू तुम कहॉ हो तुम आओ और मुझे खाना दो वरना मैं मर जाऊॅगी।"

आग को खाना चाहिये था – लकड़ी या भूसा या डंडियॉ या कुछ और जिससे वह ज़िन्दा रह सके।

पर भालू तो वहॉ से बहुत दूर था वह आग की पुकार नहीं सुन सका। वह तो जंगल में रसभरियॉ खा रहा था।

आग ने एक बार फिर पुकारा — "आओ भालू मुझे खाना दो मुझे भूख लगी है।"

इस समय आग में बस बहुत कम कोयले बचे थे बाकी सब कुछ वह खा कर खत्म कर चुकी थी और अब मरने वाली हो रही थी।

इत्तफाक से उस समय एक आदमी उधर से जा रहा था तो उसने आग की यह पुकार सुनी "मुझे खाना दो वरना मैं मर जाऊॅगी।" तो उसने एक मुट्ठी सूखी घास उठायी और मरती हुई

आग में डाल दी। साथ में उसने उसके पास बैठ कर उसको थोड़ी सी हवा भी दी। उसने देखा कि किस तरह से उसकी उस हल्की सी हवा से वह आग और तेज़ जलने लगी।

उधर वह सूखी घास भी जल कर खत्म होने लगी थी सो उसने कुछ सूखे पाइन कोन और सूखी डंडियॉ उठायीं और आग में डाल दीं। उनके जल जाने के बाद उसने फिर और बड़ी लकड़ियॉ उठायीं और उनको आग में डाल दीं।

आग को खाना मिला तो आग में जान आ गयी। वह और मजबूत हो गयी। वह और ज़ोर से जलने लगी। आदमी को वहॉ बैठे बैठे देर हो गयी थी सो उसको भी भूख लगी थी। आग ने कहा कि वह उस पर अपना खाना पका सकता था।

अब आग और आदमी दोस्त हो गये थे सो वह आदमी के साथ उसके घर जाने के लिये तैयार हो गयी तो आदमी कोई चीज़ ऐसी ढूॅढने गया जिसमें वह आग को अपने घर ले जा सकता।

अब शाम हो गयी थी। भालू का पेट भी बहुत भर गया था और भालू को जंगल में ठंड भी लगने लगी थी सो वह अपनी गुफा में लौटा तो उसने देखा कि उसकी गुफा में तो ॲधेरा है।

भालू ने अपनी आग की तरफ देखा तो आग ने उसको गर्म करने से मना कर दिया। भालू ने एक बार और आग के पास आने की कोशिश की तो उसने भालू की मूॅछें जला दीं।

इससे भालू को बहुत दर्द हुआ और वह जंगल भाग गया और उसने फिर आग के पास आने की कोशिश भी नहीं की।

उधर आदमी भी आग घर ले जाने के लिये जल्दी ही एक मिट्टी का बर्तन ले कर वहाँ वापस आ गया। वह उसे उस बर्तन में रख कर अपने घर ले गया। वहाँ उसने आग जलानी सीखी, आग को जलाये रखना सीखा और उसको अपनी रोज की ज़िन्दगी में इस्तेमाल करना सीखा।

उसके बाद से फिर आग हमेशा के लिये आदमी की हो गयी।

6 मकड़े का खाना[18]

यह लोक कथा उत्तरी अमेरिका महाद्वीप के अमेरिका देश के टैक्सास प्रान्त में कही सुनी जाती है।

एक बार की बात है कि एक मकड़ा[19] एक जंगल के किनारे बैठा हुआ था। उसके पास ही एक नदी बह रही थी। उस समय दिन का तीसरा प्रहर था।

वह पेड़ की पत्तियों से आती धूप का आनन्द ले रहा था और खुशी से गा रहा था। बीच बीच में वह अपने खाने के लिये इधर उधर भी देखता जा रहा था।

तभी एक मेंढक की लम्बी सी जीभ बाहर निकली और उसने उसको पकड़ लिया। उसने उसको ठीक से पकड़ा ताकि वह कहीं उसकी पकड़ से छूट न जाये और बोला — "ओह तुम तो मेरे घर के पीछे तक ही आ गये।"

---

[18] Cricket's Dinner – a folktale from USA, North America. Adapted from the Web Site : http://www.uexpress.com/tell-me-a-story/2015/6/14/wheeeeeeai-a-haitian-folktale
By Mike Lockett
[Author's Note : This story is an addaptation of a folktale in The Child's Book of Folklore, 1947, edited by Marion Emrich and George Korson who atributed the story to folk stories in Texas and Southwestern Lore, 1927, by Bertha McKee Dobie, University of Texas Press.]

[19] Translated for the word "Cricket". See its picture above.

मकड़ा बोला — "मेरा तुम्हारे घर के पीछे आने तक का कोई इरादा नहीं था। अगर तुम मुझे इस बार छोड़ दोगे तो मैं अब ऐसा फिर कभी नहीं करूँगा।"

मेंढक बोला — "मैं ऐसा नहीं कर सकता। तुम तो मेरा खाना हो। खाना खिलाने के लिये मेरे एक पत्नी है बच्चे हैं। मेरे बच्चे अभी अभी नदी से बाहर आये हैं।

उन्होंने अभी तक केवल वे मच्छर और छोटे छोटे कीड़े ही खाये हैं जो पानी पर घूमते रहते हैं। तुमको तो वे अपने खाने में शौक से खायेंगे और खा कर बहुत खुश होंगे।"

अभी ये बातें चल ही रही थीं कि एक नर छिपकली की चिकनी सी जीभ बाहर लपलपायी और उसने मेंढक को पकड़ कर अपने गले के अन्दर कर लिया।

नर छिपकली बड़ी सावधानी से बोला ताकि मेंढक उसके मुँह से बाहर न निकल जाये — "ओह तुम तो मेरे घर के पीछे तक ही आ गये।"

मेंढक बोला — "मेरा तुम्हारे घर के पीछे आने तक का कोई इरादा नहीं था। अगर तुम मुझे इस बार छोड़ दोगे तो मैं अब ऐसा फिर कभी नहीं करूँगा।"

नर छिपकली बोला — "मैं ऐसा नहीं कर सकता क्योंकि तुम तो मेरा खाना हो। खाना खिलाने के लिये मेरे घर में एक पत्नी है बच्चे हैं। मेरे बच्चे अभी अभी अंडों से बाहर निकले हैं।

उन्होंने अभी तक केवल वे मच्छर और छोटे छोटे कीड़े ही खाये हैं जो पानी पर घूमते रहते हैं। तुमको तो वे अपने खाने में बड़े शौक से खायेंगे और तुमको खा कर बहुत खुश होंगे।"

अभी उन दोनों में ये बातें चल ही रही थीं कि एक सॉप की लम्बी सी जीभ लपलपाती बाहर निकली और उसने नर छिपकली को पकड़ कर अपने गले के अन्दर कर लिया।

सॉप बड़ी सावधानी से बोला ताकि मेंढक उसके मुँह से बाहर न निकल जाये — "ओह तुम तो मेरे घर के पीछे तक ही आ गये।"

नर छिपकली बोला — "मेरा तुम्हारे घर के पीछे आने तक का कोई इरादा नहीं था। अगर तुम मुझे इस बार छोड़ दोगे तो मैं अब ऐसा फिर कभी नहीं करूँगा।"

सॉप बोला — "मैं ऐसा नहीं कर सकता क्योंकि तुम तो मेरा खाना हो। खाना खिलाने के लिये मेरे घर में एक पत्नी है बच्चे हैं। मेरे बच्चे अभी अभी अंडों से बाहर निकले हैं।

उनकी मॉ अभी तक उनको अपने अन्दर लिये हुए उस समय का इन्तजार कर रही थी जब तक वे पैदा होते हैं। अब वे पैदा हो गये हैं तो वे भूखे हैं।

बहुत सारे सॉप ऐसे हैं जो अपने बच्चों की बिल्कुल भी परवाह नहीं करते पर मैंने सोचा कि मैं अपने बच्चों को तब तक खाना खिलाऊँगा जब तक वे बड़े होते हैं। तुमको तो वे अपने खाने में शौक से खायेंगे और खा कर बहुत खुश होंगे।"

अभी वे दोनों ये बातें कर ही रहे थे कि ऊपर से एक बड़े से चिड़े ने नीचे की तरफ कूद लगायी और उस साँप को अपने पंजे में उठा कर ऊपर उड़ गया।

वह चिड़ा बड़ी सावधानी से बोला ताकि वह साँप उसके पंजे में से बाहर न निकल जाये — "ओह तुम तो मेरे घर के पीछे तक ही आ गये।"

साँप बोला — "मेरा तुम्हारे घर के पीछे आने तक का कोई इरादा नहीं था। अगर तुम मुझे इस बार छोड़ दोगे तो मैं अब ऐसा फिर कभी नहीं करूँगा।"

चिड़ा बोला — "मैं ऐसा नहीं कर सकता क्योंकि तुम तो मेरा खाना हो। खाना खिलाने के लिये मेरे घर में एक पत्नी है बच्चे हैं।

मेरे बच्चे अभी अभी अंडों से बाहर निकले हैं और खाने के लिये घर में मेरा इन्तजार कर रहे हैं। मैं और उनकी माँ उनके लिये खाना ढूँढते घूम रहे हैं। तुमको तो वे अपने खाने में शौक से खायेंगे।"

वे अभी ये बातें कर ही रहे थे कि "बैंग" की एक आवाज हुई। एक शिकारी ने अपनी बन्दूक चलायी और उसका धुँआ उसकी बन्दूक से निकलता दिखायी दिया और वह चिड़ा चक्कर खा कर नीचे गिर पड़ा।

शिकारी जहाँ चिड़ा मर कर गिरा था उधर की तरफ जाता हुआ बोला — "ओह तुम तो मेरे घर के पीछे तक ही आ गये।"

पर उसके बाद तो जो कुछ वहाँ हो रहा था उसको देख कर तो शिकारी के होश ही उड़ गये।

साँप ने नर छिपकली को छोड़ दिया था और नर छिपकली उस चिड़े के मुँह में से निकलने की भरसक कोशिश कर रहा था।

जबकि नर छिपकली ने मेंढक को छोड़ दिया था और वह साँप के मुँह से निकलने की भरसक कोशिश कर रहा था।

उधर मेंढक ने मकड़े को छोड़ दिया था और वह खुद नर छिपकली के मुँह से निकलने की भरसक कोशिश कर रहा था।

उधर मकड़ा भी मेंढक के मुँह से निकलने की भरसक कोशिश कर रहा था। वह जल्दी ही मेंढक के मुँह से बाहर आ गया। पर इस सब में वह अपनी भूख भूल गया और तुरन्त ही अपने घर भाग गया।

शिकारी ने अपना चिड़ा उठाते हुए और अपने घर की तरफ जाते हुए कहा — "अफसोस चिड़े। मेरे घर में एक पत्नी है बच्चे हैं और मुझे उनके लिये खाने का इन्तजाम करना है। मुझे यकीन है कि वे तुम्हें अपने खाने में जरूर पसन्द करेंगे।"

7 याहूला[20]

यह लोक कथा यह बताती है कि याहूला कीक[21] जो यू ऐस ए के जियोर्जिया प्रान्त के लम्पकिन काउन्टी में डाहलोनेगा के पास से बहती है का नाम याहूला कैसे पड़ा। उत्तरी अमेरिका के चैरोकी जनजाति के लोग उसको इस नाम से क्यों पुकारते हैं।

बहुत साल पहले, अमेरिका की क्रान्ति[22] से भी पहले, याहूला अपनी चैरोकी जनजाति का एक बहुत ही अमीर सौदागर था। उसके पास बहुत सारे घोड़े थे जिनके गले में बॅधी हुई घंटियों की टन टन की आवाज किसी भी पहाड़ी रास्ते पर कहीं से भी सुनी जा सकती थी।

एक बार बहुत सारे लोग शिकार के लिये निकले तो सारे के सारे लड़ने वाले बाहर थे पर जब उनका शिकार का काम खत्म हो गया तो वे सब घर लौटे।

जब वे घर लौटने लगे तो उन्होंने देखा कि याहूला उनके साथ नहीं था। पहले तो उन्होंने उसका कुछ देर तक इन्तजार किया फिर

[20] Yahula – a Cherokee folktale from Native Americans, North America. Adapted from the Web Site : http://www.firstpeople.us/FP-Html-Legends/Yahula-Cherokee.html

[21] Creek is a word for the small river-like stream coming from the sea, called inlet of the sea, inside the land for some distance. It may dry in summer or drought period. Yahula Creek flows by Dahlonega, in Lumpkin County, Georgia, USA.

[22] American Revolution took place between 1765 and 1783 AD.

उसको ढूँढा पर वह उनको कहीं नहीं मिला। आखिर वे उसके बिना ही घर चले गये।

उसके दोस्त लोग इस बात से बहुत दुखी हुए क्योंकि उनको लगा कि वह मर गया। कुछ समय बाद वे उसको देख कर बहुत खुश हुए जब उन्होंने देखा कि वह उनके साथ शाम का खाना खाने के लिये बैठा हुआ है।

जब उन्होंने उससे पूछा कि वह कहाँ था तो उसने बताया कि वह पहाड़ों में खो गया था। नूनेही[23] ने उसको ढूँढ लिया था और वे उसको अपने शहर ले गये थे। सो वह अब तक वहीं था।

उन्होंने उसके साथ बहुत ही अच्छा बर्ताव किया और उसकी बहुत अच्छी देखभाल की। फिर उसकी अपने दोस्तों को देखने की इच्छा उसको यहाँ खींच लायी।

उसके दोस्तों ने जब उससे खाना खाने के लिये कहा तो उसने कहा कि अब बहुत देर हो चुकी है। उसने अब परियों के खाने का स्वाद चख लिया है सो अब वह आदमियों का खाना कभी नहीं खा पायेगा। और इसी लिये वह अब अपने परिवार के साथ भी नहीं रह पायेगा। इसलिये अब उसको नूनेही के पास ही वापस जाना चाहिये।

उसकी पत्नी बच्चों और भाइयों ने उसको वहाँ ठहरने के लिये बहुत प्रार्थना की पर वह बोला कि वह अब वहाँ रुक ही नहीं सकता

[23] Nunnehi – the Immortals

था क्योंकि अब अगर वह वहाँ रहा तो वह वहाँ मर जायेगा। इसलिये उसके पास अब दो ही रास्ते थे या तो वह अब अमर लोगों के साथ रह सकता था या फिर अपने लोगों में रह कर मर जाता।

उसने उन लोगों से और कुछ देर तक बातें की फिर वह जाने के लिये उठा। उन सबने उसको बैठा हुआ देखा जब वह वहाँ बैठा हुआ बातें कर रहा था।

फिर उन्होंने उसको खड़ा हो कर जाते हुए देखा पर जैसे ही वह दरवाजे से बाहर निकला तो वह तो वहाँ से ऐसे गायब हो गया जैसे वह कभी वहाँ आया ही न हो।

पर उसके बाद वह अपने लोगों से मिलने और बात करने के लिये अक्सर आ जाता था।

वे लोग उसको दरवाजे में से घुसते देखते फिर जब वह बैठ जाता और उनसे बातें करता तो भी वह उसको देखते रहते पर जैसे ही वह घर के दरवाजे के बाहर निकलता वह उनको दिखायी नहीं देता चाहे उसको सैंकड़ों आखें ही क्यों न देख रही हों। वह वहाँ से बाहर निकलते ही गायब हो जाता।

अब वह अक्सर ही उनके पास आ जाता पर बाद में उसका वहाँ आना इतना बढ़ गया कि नूनेनी शायद उससे गुस्सा हो गयीं और फिर उसके बाद से वह नहीं आया।

पहाड़ पर जहाँ क्रीक खत्म होती है, आज के डाहलोनेगा के करीब दस मील ऊपर, पत्थर का एक बिना कटा हुआ चौकोर बन्द

ऑगन है जिस पर न तो कोई छत है और न ही जिसका कोई दरवाजा है।

लोगों का कहना है कि वह वहॉ रहता है। इसी लिये चैरोकी लोगों ने उस जगह का नाम याहूला रख दिया और वह क्रीक भी इसी नाम से जानी जाती है।

अक्सर अगर कोई यात्री उधर के रास्ते से रात को देर से आये तो वह याहूला की आवाज में उसके गाये हुए उसके कुछ प्रिय पुराने गीत सुन सकता है जो वह जब गाया करता था जब अपने घोड़ों को पहाड़ पर ले जाया करता था।

उसके गीतों के साथ उसके घोड़ों की आवाज, कोड़े की आवाज, घोड़ों की गर्दन में बॅधी घंटियों की आवाज तो सुनी जाती थी पर कोई उन घुड़सवार या घोड़ों को नहीं देख पाता था हालॉकि ये सब आवाजें उसके बराबर से ही जा रही होती थीं। और दूसरी बात कि ये आवाजें सब रात को ही आती थीं।

एक आदमी था जो याहूला का दोस्त था। वह याहूला के गायब जाने के बाद उसके गाये हुए गीत गाता रहा पर अचानक ही वह मर गया। उसके बाद से चैरोकी लोग उन गीतों को गाने से डरने लगे। उसके बाद वे गीत फिर बहुत दिनों तक नहीं गाये गये।

उसके बाद पहाड़ों पर भी वे गीत सुनायी देने बन्द हो गये तो लोगों ने सोचा कि शायद याहूला वहॉ से चला गया – शायद पश्चिम की तरफ जहॉ उसकी जनजाति वाले पहले से ही चले गये थे।

यह अब इतनी पुरानी बात हो गयी कि अब तो वहॉ के पत्थर के मकान भी सब टूट फूट गये। पर कई बूढ़े लोगों के पिताओं ने करीब सौ साल पहले उसे देखा उसके गीत सुने और उसकी घंटियों की आवाज सुनी।

जब चैरोकी लोग **1838** में जियोर्जिया से इन्डियन टैरीटरीज़ में बसने गये तो चैरोकी लोगों ने कहा कि शायद याहूला वहॉ पहले से ही चला गया है। जब हम वहॉ पहुॅचेंगे तब हम उसको वहॉ सुन सकेंगे। पर वह उनको वहॉ भी कभी सुनायी नहीं दिया।

8 बिल्ला और कुत्ता साथ क्यों नहीं बैठते[24]

यह लोक कथा उत्तरी अमेरिका महाद्वीप के हेटी देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार मिस्टर कुत्ते और मिस्टर बिल्ले में आपस में बात हुई कि वे भगवान के पास जायें और उनसे उनकी कुछ कृपा माँगें।

मिस्टर बिल्ला बोला कि वह भगवान के पास जा कर भगवान से यह पूछेगा कि "क्या मरे हुए लोग वापस ज़िन्दा नहीं होते?"

मिस्टर कुत्ता बोला कि वह भगवान के पास जा कर भगवान से यह पूछेगा कि "क्या मरे हुए लोग वापस ज़िन्दा हो सकते हैं?"

सो उन्होंने तय किया कि इसके लिये वे दौड़ लगायेंगे कि भगवान के पास पहले कौन पहुँचता है।

अब मिस्टर बिल्ला तो बहुत चालाक था। उसने जिस जिस रास्ते से मिस्टर कुत्ते को जाना था वहाँ वहाँ के हर मोड़ पर चारों तरफ हड्डियाँ रख दीं ताकि वह उनको चबाता जाये और वह धीरे दौड़े।

[24] Why Cats and Dogs Never Get Along – a folktale from Haiti, North America.
Adapted from the Web Site :
https://www.candlelightstories.com/2010/01/18/folktale-from-haiti-why-cats-and-dogs-never-get-along/ Adapted by Donalson Latour

मिस्टर कुत्ता अपने आपको होशियार तो बहुत समझता था पर वह इतना होशियार नहीं था कि वह मिस्टर बिल्ले को धोखा दे सके।

सो उसने मिस्टर बिल्ले के जाने के रास्ते के हर मोड़ पर जहॉ जहॉ से वह जाने वाला था एक एक कटोरा दूध रख दिया ताकि वह अपनी दौड़ में धीमा पड़ जाये और भगवान के पास देर से पहुँचे।

जब मिस्टर बिल्ले ने दौड़ना शुरू किया तो उसने एक कटोरे में दूध रखा देखा। उसने उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया क्योंकि वह जानता था कि मिस्टर कुत्ता उसके साथ क्या करना चाह रहा था।

पर मिस्टर कुत्ता इतना बेवकूफ और लालची था कि वह अपने रास्ते के हर उस मोड़ पर रुका जहॉ जहॉ उसके हड्डी रखी मिली। पर उसको यह पता नहीं था कि वे हड्डियॉ मिस्टर बिल्ले ने उसकी दौड़ को धीमा करने के लिये रखी थीं।

इसलिये मिस्टर बिल्ला भगवान के पास पहले पहुँच गया और जब वह पहले पहुँच गया तो उसने भगवान से बात करना शुरू कर दिया।

वह बोला — "भगवान मैं नहीं चाहता कि आप मरे हुए लोगों को धरती पर फिर से ज़िन्दा करें।"

भगवान बोले — "ठीक है। हम ऐसा ही करेंगे।"

अपनी इच्छा पूरी होते देख कर मिस्टर बिल्ला बहुत खुश हुआ और अपने घर चला गया।

जब मिस्टर कुत्ते ने हड्डियों का खूब आनन्द ले लिया तो वह भी भगवान के पास पहुँचा और उससे पूछा — "भगवन क्या मरे हुए लोग धरती पर फिर से ज़िन्दा हो सकते हैं?"

भगवान बोले — "मुझे बहुत अफसोस है मिस्टर कुत्ते। तुम्हें थोड़ी देर हो गयी।

अभी अभी मिस्टर बिल्ला यहाँ आया था और कह रहा था कि वह नहीं चाहता कि मरे हुए लोग धरती पर फिर से ज़िन्दा हों। मैंने उसकी इच्छा पहले ही पूरी कर दी है। अब मैं तुम्हारे लिये कुछ नहीं कर सकता।"

बस उसी दिन से कुत्ते बिल्लों को पसन्द नहीं करते। पर जब भी कोई बिल्ला किसी कुत्ते को देखता है तो वह हमेशा ही उससे एक दोस्त की तरह से मिलना चाहता है पर कुत्ते हमेशा ही बिल्लों को बड़ी नीच नजर से देखते हैं।

9 उसके पैरों पर पंख[25]

यह लोक कथा उत्तरी अमेरिका महाद्वीप के हेटी देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि गधी थी जिसका नाम था ज़ैल नैन पाई[26]। जब भी वह शहर में घूमने निकलती थी तो शहर में हर एक उसको ज़ैल कह कर पुकारता था "हैलो ज़ैल।" और ज़ैल के लम्बे बालों वाले कान उस आवाज पर खड़े हो जाते।

हालाँकि ज़ैल अपनी बड़ी बड़ी आँखें घुमा कर उस आवाज का जवाब देना चाहती पर मैम चैरिटी[27] उसकी लगाम कस कर बाँधे रखती। बल्कि साथ में वह यह और कहती — "चलती रहो ज़ैल। मेरे पास तेरे इन मिलने वालों की पुकार के लिये समय नहीं है।"

अब शहर में हर कोई ज़ैल को जितना प्यार करता था उतना ही वह मैम चैरिटी से डरता भी था।

क्यों? क्योंकि वह बहुत जल्दी गुस्सा होती थी और किसी को कुछ भी बोलने वाली बुढ़िया थी। वह गाती हुई चिड़ियों पर पत्थर फेंकती थी और छोटी छोटी बच्चियाँ जब हँसती थीं तो उनको डाँटती थी पर ज़ैल के लिये वह सबसे ज़्यादा खराब थी

---

[25] Wings on Her Feet – a folktale from Haiti, North America.
Adapted from the Web Site : https://www.candlelightstories.com/category/folktales/
Adapted by Adam price (Peace Corps Volunteer, Haiti, 1996-1998)

[26] Zel Nan Pye – name of the donkey

[27] Madam Charity – name of the mistress of donkey

हर शनिवार को मैम चैरिटी ज़ैल पर चावल और चीनी के भारी भारी बोरे लादती और उनको बाजार बेचने के लिये ले जाती।

हालाँकि मैम चैरिटी को मालूम था कि बाजार में जो पहले पहुँचेगा वही अपना सामान जल्दी और सारा बेच देगा पर इसके बावजूद वह बहुत देर से उठती थी।

फिर वह गालियाँ देते हुए अपने चावल और चीनी के बोरे इकट्ठे करती और जल्दी जल्दी ज़ैल की पीठ पर लाद देती। फिर उनको वह रस्सी से इतना कस कर बाँध देती कि ज़ैल को साँस लेनी भी मुश्किल पड़ जाती।

सबसे बाद में वह खुद ज़ैल पर बैठती उसके पेट में अपने पैर से एक ठोकर मारती और अपने पीछे धूल का बादल उड़ाती और चिल्लाती हुई चल देती — "चल तेज़ चल ओ बेवकूफ, जल्दी जल्दी चल।"

ज़ैल की यह बात कभी समझ में नहीं आयी कि मैम चैरिटी उसके साथ इतनी नीचता का बर्ताव क्यों करती थी। ज़ैल बेचारी से जितनी जल्दी हो चकता था वह उतनी जल्दी बाजार पहुँचने की कोशिश करती।

असल में उसको बाजार अच्छा भी लगता था क्योंकि वहाँ उस गाँव के और आस पास के गाँवों के गधे भी अपने अपने मालिकों के साथ आते थे।

वे सब केलों के पेड़ों की ठंडी छाया में बैठ कर एक दूसरे से बातें करते। ज़ैल भी दूसरे गधों को अपने चुटकुले सुनाती और उनके चुटकुले सुनती। वह उनके साथ खेल भी खेलती। यह सब ज़ैल को बहुत अच्छा लगता और उसे इस दिन का इन्तजार रहता।

पर मैम चैरिटी के कोड़े उसके इस ट्रिप को बेकार कर देते।

एक शाम जब ज़ैल बाजार से लौट कर घर आयी तो ज़ैल का एक दोस्त टूलूलू केंकड़ा उसके पास आाया। यह केंकड़ा मैम चैरिटी के घर के पीछे वाले कम्पाउंड में रहता था।

उसने उससे पूछा — "ज़ैल तुम्हारा आज का दिन कैसा रहा?"

ज़ैल एक लम्बी सी सॉस ले कर बोली — "अच्छा था। दूसरे गधों को देख कर और उनसे मिल कर अच्छा लगा। पर यह मैम चैरिटी ने आज मुझे इतनी ज़ोर से मारा कि मैं उनके साथ खेल नहीं पायी। मैं तो बस लेटी ही रही।"

ज़ैल आगे बोली — "तुम्हें मालूम है कि मैं काफी जल्दी चलती हॅू। साथ में मैं भारी बोझा ले जाने से भी नहीं डरती हॅू पर मेरी समझ में नहीं आता कि वह मुझे इतना मारती क्यों है।

टूलूलू बोला — "मैं जानता हॅू कि बाजार जाने के लिये मैम हमेशा ही देर से उठती है पर इस बात के लिये वह अपने आपको कभी गलत नहीं ठहराती और इसी लिये वह तुमको मारती है।"

ज़ैल उसकी बात मानती हुई बोली — "मुझे लगता है कि तुम ठीक बोल रहे हो। आज उसने कुछ ज़्यादा नहीं बेचा पर उसने मुझे हर बार से भी ज़्यादा मारा। दूसरे गधों का कहना है कि मैम चैरिटी से सभी डरते हैं इसलिये भी उसका सामान कम बिकता है।"

ज़ैल फिर बोली — "पर टूलूलू अब मैं ज़्यादा नहीं सह सकती। मेरी पीठ में बहुत दर्द होता है मेरे पैर भी दुखते है और मैं अब उसकी मार को भी और ज़्यादा नहीं झेल सकती।"

टूलूलू बोला — "तुम उसको कभी ज़ोर की दुलत्ती क्यों नहीं मारतीं?"

ज़ैल यह सुन कर डर गयी। वह डरी डरी सी बोली — "ओह नहीं नहीं टूलूलू। यह तो मैं कर ही नहीं सकती। यह ठीक नहीं है। बल्कि ऐसा करने पर तो वह मुझे इससे भी ज़्यादा मारेगी।"

टूलूलू बोला — "तुम चिन्ता न करो। मैं तुम्हारे साथ हूॅ। अगली बार जब मैम चैरिटी बाजार जायेगी तब मैं उसको देख लूॅगा। उसके बाद वह तुम्हें फिर कभी नहीं मारेगी।"

सो अगले शनिवार जब मैम चैरिटी सुबह सो कर उठी तो हर बार की तरह से देर से उठी और उठते ही उसने चिल्लाना शुरू कर दिया — "ओह सुबह के नौ बज गये मुझे तो बहुत देर हो गयी।"

वह अपने चावल और चीनी के बोरे इकट्ठा करती जा रही थी और चिल्लाती जा रही थी। तभी टूलूलू खिसक कर उसके दरवाजे के पास पहुॅच गया और एक चीनी के बोरे में छिप कर बैठ गया।

जब मैम चैरिटी ने अपने चावल और चीनी के बोरे ज़ैल के ऊपर लाद दिये और खुद भी उसके ऊपर बैठ गयी तो टूलूलू अपनी छिपी हुई जगह से बाहर निकला और उसने मैम के टखने[28] के पास से उसके लम्बे स्कर्ट का किनारा पकड़ लिया।

जैसे ही मैम चैरिटी सड़क पर पहुँची तो यह सोचते हुए कि उसको बाजार के लिये कितनी देर हो चुकी है और दिनों की तरह से ज़ैल को मारने के लिये अपना हाथ उठाया।

पर जैसे ही उसका हाथ ज़ैल को मारने के लिये ज़ैल के सुन्दर कानों तक नीचे आने वाला था कि टूलूलू ने उसके पैर में अपने पंजे गड़ा दिये।

वह बुढ़िया चिल्लायी "आह आउच। लगता है जब मैं अपने चावल और चीनी बोरे इस गधी के ऊपर लाद रही थी तो मेरे पैर में चोट लग गयी।"

कुछ पल के लिये उसने अपने हाथ से अपने टखने को मल कर सहलाया। उस समय वह यह भूल गयी कि उसको बाजार के लिये देर हो रही थी पर फिर जल्दी ही उसके दिमाग में दूसरे चावल चीनी बेचने वालों की शक्लें घूमने लगीं और वह चिल्लायी — "ओ ज़ैल की बच्ची क्या तू इससे ज़्यादा तेज़ नहीं चल सकती?"

पर ज़ैल तो पहले से ही बहुत तेज़ जा रही थी। वह और कितनी तेज़ जा सकती थी।

---

[28] Translated for the word "Ankle"

मैम चैरिटी ने एक बार फिर उसको मारने के लिये अपना हाथ उठाया पर पहले की तरह इससे पहले कि वह अपना हाथ उसको मारने के लिये नीचे लाती कि टूलूलू ने फिर से उसके टखने में काट लिया।

"उफ़।" मैम चैरिटी फिर चिल्लायी। "कितना बुरा दर्द है यह। मुझे थोड़ा सब्र रखना चाहिये। मुझे अपने टखने को और ज़्यादा आराम देना चाहिये।"

सो मैम चैरिटी यह सोचते हुए बाजार की तरफ चली कि अगली बार से उसको अपने बोरे गधी के ऊपर लादते हुए थोड़ा सावधान रहना चाहिये। और साथ में उसको सुबह में यह सब काम करने के लिये कुछ ज़्यादा समय की भी जरूरत थी क्योंकि यह सब शायद जल्दी में हुआ। तैयार होने के लिये उसको कुछ समय और चाहिये।

जब वे बाजार पहुँचे तो उसने ज़ैल को उधर ही की तरफ को मोड़ दिया जहाँ वह अपना सामान बेचने के लिये हर शनिवार बैठा करती थी। पर जब वह वहाँ पहुँची तो उसने देखा कि उसकी जगह तो कोई और बैठा हुआ है।

इस बीच किसी और ने उसकी जगह ले ली थी और वह एक डिब्बे से अपनी चीनी नाप कर बेच रही थी। इसको देख कर तो उसके तन बदन में आग लग गयी और उसका हाथ फिर से ज़ैल को

मारने के लिये उठा कि टूलूलू ने फिर से उसके टखने में काट लिया।

"उफ़ उफ़" मैम चैरिटी फिर चिल्लायी। पर अबकी बार उसकी चीख सुन कर बाजार के बहुत सारे लोग उसके पास इकट्ठा हो गये।

एक चोटी बनायी हुई बच्ची ने उससे पूछा – "क्या हुआ?"

मैम चैरिटी कुछ रुँआसी सी हो कर बोली – "आज मुझे सुबह उठने में देर हो गयी तो तैयार होने की जल्दी में शायद मेरे पैर में चोट लग गयी। बहुत दुख रहा है यह।"

एक मछियारिन वहीं पास में खड़ी थी वह बोली – "मैम आपको जल्दी उठना चाहिये।" हालाँकि उस मछियारिन को मैम चैरिटी बहुत अच्छी नहीं लगती थी पर फिर भी वह उस बुढ़िया के लिये दुखी थी।

वह आगे बोली – "अगले हफ्ते मैं सुबह छह बजे तुम्हारे घर यह देखने आऊँगी कि तुम देर तक सोती न रह जाओ।"

एक फल बेचने वाली बोली "हाँ। मैं भी तुम्हारे घर तुमको जगाने आ जाऊँगी। देखूँ ज़रा मैं तुम्हारा टखना तो देखूँ।"

यह पहली बार था कि उस फल बेचने वाली ने मैम चैरिटी से बात की थी। हालाँकि वह उसको बहुत अच्छी तरह से जानती थी पर वह उससे बात करने से कतराती थी क्योंकि उसका स्वभाव अच्छा नहीं था।

पर आज की बात अलग थी क्योंकि आज तो उसके दर्द हो रहा था सो वह आज तो उससे बड़ी नम्रता से भी बात कर रही थी।

जब मैम चैरिटी ने देखा कि बाजार के लोग उसके टखने के बारे में कितने चिन्तित हो रहे हैं तो वह रोते रोते भी हॅस पड़ी।

उस दिन पहला दिन था जब मैम चैरिटी ने अपना सारा चावल और चीनी बेचा। शाम को जब बाजार खत्म हो गया तो वह शान्ति से ज़ैल पर चढ़ कर अपने घर चली गयी।

बाद में टूलूलू के कारनामों से बेखबर ज़ैल ने टूलूलू से कहा — "आज मुझे ऐसा लग रहा था कि वह मुझे मारने वाली है पर कुछ पल के लिये वह रुक गयी और दर्द से चिल्लायी। साथ में शाम को भी वह बिना मुझे मारे पीटे और बिना गालियाँ दिये ही चली आयी। पता नहीं यह बदलाव उसके अन्दर कैसे आया।"

उसकी यह बात सुन कर टूलूलू मुस्करा दिया और अपने दिन भर की शैतानियाँ याद करते हुए हॅस कर बोला — "जब भी उसका हाथ तुम्हें मारने के लिये ऊपर जाता मेरे पंजे उसके टखने में काट लेते। ऐसा इसलिये हुआ।"

ज़ैल मैम चैरिटी के पैर की चोट का ख्याल करते हुए बोली — "ओह मेरे भगवान। मुझे लगता है कि अब उसे पता चल गया है कि उसके मुझे मारने से मुझे कितनी तकलीफ होती है।"

10 जादुई सन्तरे का पेड़[29]

यह लोक कथा उत्तरी अमेरिका महाद्वीप के हेटी[30] नाम के देश में कही सुनी जाती है।

एक बार एक लड़की थी जिसके जन्मते ही उसकी मॉ मर गयी थी। कुछ समय तक तो उसके पिता ने इन्तजार किया पर फिर उसने दूसरी शादी कर ली। जब उसने दूसरी शादी की तो उसको अपनी नयी पत्नी बड़ी नीच और बहुत ही बेरहम किस्म की मिली।

कभी कभी तो वह उस लडकी के साथ इतनी नीचता का गर्दन करती कि वह उस लड़की को सारा सारा दिन खाना भी नहीं देती थी। वह लड़की बेचारी अक्सर ही भूखी रह जाती।

एक दिन वह लड़की जब स्कूल से घर लौटी तो उसने देखा कि एक मेज पर तीन पके हुए सन्तरे रखे हैं और उनकी खुशबू से सारा कमरा महक रहा है।

उनको देख कर उस लड़की के मुॅह में पानी भर आया। उसने इधर देखा उधर देखा और जब देख लिया कि कोई आस पास में नहीं था तो उसने उनमें से एक सन्तरा उठाया, छीला और खा लिया।

---

[29] The Magic Orange Tree – a folktale from Haiti, North America. Adapted from the Web Site : http://spiritoftrees.org/the-magic-orange-tree Retold by Diane Wolkstein

[30] Haiti – is a country in Caribbean Sea but still in the continent of North America

पर वह सन्तरा इतना मीठा और रसीला था कि एक सन्तरे से उसका मन नहीं भरा। उसने फिर चारों तरफ देखा और दूसरा सन्तरा भी उठा कर खा लिया, और फिर तीसरा भी।

पर जैसे ही उसने तीसरा सन्तरा खा कर खत्म किया कि उसकी सौतेली माँ वहाँ आ गयी। आ कर उसने देखा कि उसने मेज पर जो सन्तरे रखे थे वे वहाँ नहीं हैं।

वह चिल्लायी — "किसने लिये मेरे सन्तरे जो मैंने अभी अभी मेज पर रखे थे। जिसने भी मेरे सन्तरे चुराये हैं वह अपनी आखिरी प्रार्थना कर ले क्योंकि बाद में उसको उसका भी मौका नहीं मिलेगा।"

लड़की यह सुन कर डर गयी और घर से भाग गयी। भागते भागते जंगल से होती हुई वह अपनी माँ की कब्र पर आ पहुँची और वहाँ बैठ कर रोने लगी।

वह सारी रात वहाँ बैठी बैठी रोती रही और अपनी माँ से सहायता की प्रार्थना करती रही। रोते रोते पता नहीं कब उसकी आँख लग गयी और वह वहीं सो गयी।

सुबह को सूरज निकलने के साथ साथ ही वह भी जाग गयी। पर जब वह उठी तो उसकी स्कर्ट में से कुछ नीचे गिरा। वह क्या था यह देखने के लिये वह नीचे झुकी तो उसने देखा कि वह तो सन्तरे का एक बीज था।

जैसे ही वह बीज जमीन पर गिरा वह जमीन में अन्दर तक धॅस गया और उसमें से दो छोटे छोटे हरे पत्ते निकल आये। लड़की को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ और आश्चर्य से उसने गाया —

ओ सन्तरे के पेड़, तू बड़ा हो जा, तू बड़ा हो जा
वह सौतेली मॉ है वह असली मॉ नहीं है
तू बड़ा हो जा, ओ सन्तरे के पेड़, तू बड़ा हो जा

लड़की के गाने के साथ साथ सन्तरे का पेड़ बड़ा होने लगा और वह लड़की के बराबर ही ऊॅचा हो गया। उस लड़की ने फिर गाया —

ओ सन्तरे के पेड़, शाखें निकालो. शाखें निकालो
सौतेली मॉ असली मॉ नहीं है, ओ सन्तरे के पेड़

बस उसमें से शाखें निकलने लगीं टेढ़ी मेढ़ी, लम्बी चौड़ी, मोटी पतली। उसने फिर गाया —

ओ सन्तरे के पेड़, फूलो फूलो
सौतेली मॉ असली मॉ नहीं है, ओ सन्तरे के पेड़

फिर उसमें से फूल निकलने लगे। बहुत सारे फूल निकले। कुछ ही देर में वे फूल मुरझा गये और उनकी जगह सन्तरे के छोटे छोटे फल निकल आये। वे छोटे छोटे सन्तरे देख कर लड़की बहुत खुश हुई तो उसने फिर गाया —

पक जाओ ओ सन्तरे के पेड़ के फल पक जाओ
सौतेली माँ असली माँ नहीं है, ओ सन्तरे के पेड़

कुछ ही पल में वह पेड़ मीठे पके सुनहरी सन्तरों से भर गया। यह देख कर तो वह खुशी से नाच उठी। पर जब उसका नाचना कुछ कम हुआ तो उसने ऊपर की तरफ देखा तो देखा कि वह पेड़ तो आसमान तक पहुँच गया है और वह तो किसी तरह भी वहाँ तक नहीं पहुँच सकती। अब वह क्या करे?

पर वह एक बहुत ही समझदार लड़की थी सो उसने फिर गाया —

नीचे आओ ओ सन्तरे के पेड़ नीचे आओ, और नीचे आओ
सौतेली माँ असली माँ नहीं है, ओ सन्तरे के पेड़

उसका गाना सुन कर वह सन्तरे का पेड़ नीचे आ गया। जब वह उस लड़की की ऊँचाई तक आ गया तो उसने उस पेड़ पर से बहुत सारे सन्तरे तोड़े और उनको ले कर घर चली गयी।

जैसे ही उसकी सौतेली माँ ने उस लड़की के हाथ में सुनहरी सन्तरे देखे उसने वे सन्तरे उसके हाथ से छीन लिये और उनको खुद खाने लगी।

उसने बहुत जल्दी ही वे सारे सन्तरे खत्म कर लिये। फिर वह बोली — "मेरी प्यारी बिटिया, यह तो बता तुझे इतने मीठे और रसीले सन्तरे कहाँ से मिले?"

लड़की थोड़ा हिचकिचायी। असल में वह उसको यह बताना नहीं चाहती थी कि उसको वे सन्तरे कहाँ से मिले सो वह चुप खड़ी रह गयी।

पर लड़की को कुछ न बोलते देख कर उसकी सौतेली माँ ने उसकी कलाई पकड़ कर ऐंठनी शुरू कर दी और बोली — "बता, कहाँ से आये ये सन्तरे?"

तब लड़की उसको जंगल में उस सन्तरे के पेड़ के पास ले गयी। पर जैसा कि तुमको मालूम है कि लड़की बहुत समझदार थी। जैसे ही वह उस सन्तरे के पेड़ के पास आयी उसने गाया —

ओ सन्तरे के पेड़, तू बड़ा हो जा, तू बड़ा हो जा
वह सौतेली माँ है वह असली माँ नहीं है
तू बड़ा हो जा, ओ सन्तरे के पेड़, तू बड़ा हो जा

और सन्तरे के पेड़ ने बढ़ना शुरू कर दिया। वह फिर आसमान तक पहुँच गया था। अब उसकी सौतेली माँ क्या करे?

उसने फिर से उससे कहना शुरू किया — "तू ही तो मेरी प्यारी बेटी है। तू आज से जितना चाहे उतना खा लिया करना। पेड़ से कह कि वह नीचे आ जाये फिर तू उस पर से मेरे लिये सन्तरे तोड़ देना।"

यह सुन कर लड़की ने बहुत ही नीची आवाज में गाया —

नीचे आओ ओ सन्तरे के पेड़ नीचे आओ, और नीचे आओ
सौतेली माँ असली माँ नहीं है, ओ सन्तरे के पेड़

अब वह पेड़ नीचा होना शुरू हो गया। जब वह पेड़ उसकी माँ की ऊँचाई तक आ गया तो उसकी माँ उसके ऊपर कूद पड़ी और इतनी जल्दी जल्दी चढ़ने लगी जैसे कोई बन्दर चढ़ता है। जैसे जैसे वह हर शाख पर चढ़ती गयी वह उस पेड़ के सारे सन्तरे खाती गयी।

लड़की ने देखा कि जिस तरह से उसकी सौतेली माँ उस पेड़ से सन्तरे तोड़ तोड़ कर खा रही थी उस तरह से तो उसके लिये कोई भी सन्तरा नहीं बचेगा। तो फिर वह क्या करेगी। सो उसने फिर से नीची आवाज में गाया —

ओ सन्तरे के पेड़, तू बड़ा हो जा, तू बड़ा हो जा
वह सौतेली माँ है वह असली माँ नहीं है
तू बड़ा हो जा, ओ सन्तरे के पेड़, तू बड़ा हो जा

और वह पेड़ फिर बढ़ने लगा। और उसके साथ साथ ऊँची होने लगी उसकी माँ भी। यह देख कर वह चिल्लायी — "अरे कोई है? मुझे बचाओ, मुझे कोई बचाओ।"

लड़की चिल्लायी — "ओ सन्तरे के पेड़ टूट जा, ओ सन्तरे के पेड़ टूट जा।" बस यह सुनते ही वह सन्तरे का पेड़ तो हजारों टुकड़ों में टूट कर नीचे गिर गया और साथ में उसकी माँ भी।

फिर उसने उस पेड़ की टूटी शाखाओं में उस पेड़ के बीज को ढूँढा तो बड़ी मुश्किल से उसको एक छोटा सा सन्तरे का बीज मिला। उसने उसको फिर से बो दिया और गाया —

ओ सन्तरे के पेड़, तू बड़ा हो जा, तू बड़ा हो जा
वह सौतेली माँ है वह असली माँ नहीं है
तू बड़ा हो जा, ओ सन्तरे के पेड़, तू बड़ा हो जा

जब वह पेड़ उसकी अपनी ऊँचाई तक का हो गया तो उसने उसमें बहुत सारे सन्तरे तोड़ लिये और जा कर उनको बाजार में बेच आयी। वे सन्तरे इतने मीठे थे कि लोगों ने उसके सारे सन्तरे बहुत अच्छे दामों पर खरीद लिये।

11 दुनियाँ का सबसे होशियार आदमी[31]

यह लोक कथा उत्तरी अमेरिका महाद्वीप के हेटी देश में कही सुनी जाती है। यह वहाँ के सबसे मशहूर चरित्र की लोक कथा है जो सब लोग बड़े शौक से कहते सुनते हैं और वह है टी मैलिस[32]।

हेटी[33] का बूढ़ा राजा एक बहुत ही अमीर आदमी था। उसके पास वे सब चीज़ें थीं जिनको कि तुम सोचते हो कि वे एक अमीर आदमी के पास होनी चाहिये।

उसके पास मकान थे, बहुत सारे, और वे सब सोने और चाँदी से भरे हुए थे। उसकी आलमारियाँ दुनियाँ के सबसे अच्छे कपड़ों से भरी हुई थीं। और उसके खजाने के बक्से खजाने से भरे हुए थे।

पर राजा को इन सबसे कोई मतलब नहीं था। केवल एक ही चीज़ थी जो उसको खुश करती थी और वह थी उसकी पालतू बच्ची भेड़[34]। उसके साथ वह ऐसे खेलता था जैसे वह उसकी अपनी बच्ची हो।

---

[31] The Smartest Man in All the Land - a folktale from Haiti, North America.
Adopted from the Web Site : http://www.themuralman.com/haiti/haiti_folk_tale.html
Collected and retold by Phillip Martin

[32] Ti Malice – the smartest man of the world

[33] Haiti – the country in Caribbean Islands, still in the continent of North America

[34] Translated for the word "Lamb" – it may be male or female, here it is female child of sheep.

हालाँकि यह राजा का अपना काम नहीं था पर फिर भी वह उस बच्ची भेड़ को अपने हाथों से नहलाता, उसके बालों में कंघी करता और उसको रिबन लगा कर सजाता।

यह काम वह उसके लिये रोज करता था तो इसमें कोई शक नहीं कि क्योंकि यह सब काम राजा को खुशी देता था तो उस बच्ची भेड़ का नाम जौय[35] पड़ गया।

वह राजा के दिल को बहुत ही खुशी देती पर इसके साथ ही राजा के दिल में एक डर भी था कि कहीं उसकी खुशी के साथ कोई भयानक घटना न घट जाये।

राजा को यह भी पता था कि अगर कोई इतना अक्लमन्द था जो उसकी खुशी को उसी के सामने से चुरा लेता तो वह केवल टी मैलिस हो सकता था क्योंकि वही एक था जो दुनियाँ का सबसे होशियार आदमी था।

और टी मैलिस भी यकीनन यह जानता था किसी मुसीबत में कैसे पड़ा जाता है और फिर कैसे उससे बाहर निकला जाता है। अगर राजा की जौय को कुछ हुआ तो समझो कि टी मैलिस की आफत आ गयी।

टी मैलिस को यह भी बहुत अच्छी तरह पता था कि राजा के पास एक "मैरी लिटिल लैम्ब" थी जो बहुत ही मोटी और नर्म थी। साथ में उसको यह भी पता था कि वह राजा की बहुत लाड़ली थी।

[35] Joy – means happiness

पर टी मैलिस को यह भी पता था कि उसको बच्चे भेड़ का मॉस बहुत अच्छा लगता था। सो पहले उसके अपने दिल में और उससे भी ज़्यादा उसके पेट में यह इच्छा थी कि वह उस बच्ची भेड़ को चुरा ले।

सो एक दिन उस चालाक टी मैलिस ने निश्चय किया कि वह इसके बारे में कुछ न कुछ कर के रहेगा और फिर राजा के लिये कोई ख़ुशी नहीं रहेगी।

और फिर उसने यही किया।

इससे पहले कि तुम तीन तक गिनती गिनो – एक, दो, तीन... वह बच्ची भेड़ उसकी रसोई में हाजिर थी। वह उसके बर्तन में थी और फिर वह उसके पेट में थी।

जब टी मैलिस ने उस मेमने का आख़िरी कौर भी खा लिया तो वह जा कर अपनी कुर्सी पर बैठ गया और अपने पेट पर हाथ फेरने लगा। आज तो वह वाकई वह "जौय" से भरा हुआ था।

पर राजा के महल में न तो कोई ख़ुशी थी और न ही "जौय"। राजा चिल्लाया — "मेरी जौय कहॉ है?"

उसने अपना सारा घर ढूँढ लिया, अपना सारा बागीचा ढूँढ लिया, नौकरों ने भी चारों तरफ ढूँढ लिया पर जौय का कहीं पता न था।

राजा ने तो अपने पलंग के नीचे भी देख लिया, उसको वहाँ जौय का एक रिबन तो मिला पर जौय नहीं मिली। उसको यकीन हो गया कि जरूर ही उसके साथ कुछ भयानक घटना घट गयी है।

जब एक नौकर को शाही बागीचे से दूर जाने वाले रास्ते पर जौय का एक और रिबन पड़ा मिला तो राजा को विश्वास हो गया कि अब उसकी जौय कहीं नहीं मिलने वाली।

उसने तुरन्त ही अपने नौकरों को हुक्म दिया कि वे जादू करने वाले पुजारी[36] को बुला कर लायें। अगर मेरी जौय का पता लगाने कोई तरीका है तो केवल वह जादू वाला पुजारी ही बतायेगा।

यह जादू जानने वाला पुजारी देश का सबसे अच्छा जादू जानने वाला था सो अगर कोई जौय के बारे में कुछ बता सकता था तो वह यही आदमी था और कोई नहीं।

इस पुजारी ने आ कर राजा को शान्त किया और बोला — "राजा साहब, आप चिन्ता न करें, मैं चोर को पता लगा लूँगा। पर मुझे इसके लिये एक मोमबत्ती, कुछ पैसे और एक बर्तन पानी चाहिये।"

उसकी बात सुन कर राजा बहुत खुश हुआ। तुरन्त ही राजा के नौकर उसकी माँगी हुई सब चीज़ें ले कर वहाँ हाजिर हो गये। उसने मोमबत्ती जलायी, पैसों से एक क्रास बनाया और पानी से भरा वह बर्तन अपने सामने रख लिया। फिर उसने कुछ जादू किया।

---

[36] Translated for the word "Houngan"

आखिर उस पुजारी के चेहरे पर एक मुस्कान दौड़ गयी पर जल्दी ही वह गायब भी हो गयी। वह बोला — "मुझे बहुत अफसोस है राजा साहब कि आपकी जौय मर गयी है। किसी ने उसे चुरा कर खा लिया है।"

राजा चिल्लाया — "क्या? यह किसने किया? मुझे बताओ कि किसने मेरी जौय को चुराया? किसने मेरी जौय को खाया? वह आदमी अब उसके बाद दूसरा कौर नहीं खायेगा।"

पुजारी ने राजा को शान्त किया — "राजा साहब, मैं आपको चोर का नाम तो नहीं बता सकता पर मैं आपको इतना जरूर बता सकता हूँ कि वह दुनियाँ का सबसे ज़्यादा होशियार आदमी है। उम्मीद है कि आप समझ गये होंगे कि वह कौन है।"

राजा बुड़बुड़ाया — "हाँ मैं समझ गया।"

राजा चिल्लाया — "ओ चौकीदारो, टी मैलिस को मेरे पास ले कर आओ। उसको मेरे पास जंजीरों से बाँध कर लाओ और अभी अभी ले कर आओ।"

चौकीदारों का सरदार बोला — "जी राजा साहब। पर आपको तो मालूम है कि टी मैलिस एक बहुत ही बड़ा चालाक है। उसको पकड़ना आसान नहीं है। हमने उसको पकड़ने की पहले भी कई बार कोशिश की है पर हम उसको कभी पकड़ ही नहीं पाये।"

राजा ने उन सबको चेतावनी दी — "पर इस बार पकड़ कर लाओ नहीं तो तुमको पता है कि उसकी बजाय मैं किसको जेल भेज दूँगा?"

अब चौकीदारों का सरदार खुद तो सब लोगों में सबसे ज़्यादा होशियार तो नहीं था पर वह यह जरूर जानता था कि राजा किसके बारे में बात कर रहा था।

उसको यह भी पता था कि किसी को भी नाराज नहीं करना चाहिये सो वह राजा के सामने से सारे चौकीदारों को ले कर उस चालाक टी मैलिस को ढूँढने के लिये चला गया।

जब वह पुजारी और वह चौकीदार वहाँ से चले गये तो राजा को सोचने के लिये कुछ समय मिला।

वह जितना ज़्यादा सोचता था उसको उतना ही ऐसा लगता था कि उसको अपनी बच्ची भेड़ की याद में कोई दावत देनी चाहिये। उसने सोचा कि वह हर एक को उस दावत में बुलायेगा ताकि लोग यह जान लें कि वह अपनी बच्ची भेड़ को कितना प्यार करता था।

अब क्योंकि टी मैलिस दुनियाँ का सबसे ज़्यादा होशियार आदमी था उसको सब कुछ ठीक ठीक पता था कि महल में क्या हो रहा है।

उसको मालूम था कि राजा बहुत गुस्सा है। उसको यह भी मालूम था कि राजा के चौकीदार उसको पकड़ने के लिये घूम रहे हैं।

और उसको यह भी मालूम था कि अब उसको क्या करना है। वह बूकी[37] की खोज में चल दिया।

बूकी दुनियाँ में कोई सबसे ज़्यादा होशियार आदमी तो नहीं था पर उसके बारे में सब कुछ सच सच बताना भी कोई आसान काम नहीं था। हाँ उसके बारे में इतना जरूर कहा जा सकता था कि वह दुनियाँ का सबसे ज़्यादा होशियार आदमी का बिल्कुल उलटा था और टी मैलिस यह सब जानता था।

टी मैलिस जैसे ही बूकी के घर में घुसा वह बाहर से ही चिल्लाया — "ओ मेरे दोस्त बूकी, आज खुशी के दिन तुम कैसे हो?"

बूकी बोला — "खुशी के दिन? आज किस बात की खुशी का दिन है भाई?"

टी मैलिस बोला — "तुम कहाँ रहते हो मेरे दोस्त? आज तो सारे लोग राजा की दी जाने वाली दावत के बारे में बात कर रहे हैं जो वह अपनी छोटी भेड़ के लिये दे रहा है। वहाँ बहुत सुन्दर सुन्दर पोशाकें होंगी, बढ़िया गाना होगा और बल्कि गाने का मुकाबला भी होगा।"

"गाने का मुकाबला?"

[37] Bouqui – or Bouki, name of a foolish man, a friend of Ti Malice

टी मैलिस जानता था कि उसको चालाकी से जाल कैसे बुनना है। उसको मालूम था कि उसके दोस्त को ज़िन्दगी में दो ही चीज़ें बहुत पसन्द थीं और उनमें से एक था गाना। सो बस उसके नाम ने ही बूकी का ध्यान अपनी तरफ खींच लिया।

पर यह जाल तब तक पूरा नहीं हो सकता था जब तक कि बूकी की पसन्द की दूसरी चीज़ न हो – और वह था खाना। सब तरह का खाना। जब तक बूकी को खुद खाना न बनाना पड़े तो बस वह स्वर्ग में था। या फिर इस समय जाल में।

टी मैलिस बोला — "यह सब तो "जौय" के बारे में है। और अगर तुम वाकई बढ़िया गा सके, जैसा कि मैं सोचता हूँ कि तुम गा सकोगे, तब तो तुम राजा की दावत में सभी लोगों का दिल जीत लोगे।

हॉ हॉ बूकी, मैंने सुना है कि जीतने वाले को तीन बकरे, कुछ भेड़ें, एक सूअर और एक इनामी बैल मिलेगा।"

यह सुन कर तो बूकी की ऑखें फैल गयीं और इस दावत के बारे में सोच कर ही उसके मुँह में पानी आने लगा।

वह रो कर बोला — "पर मैं वहॉ गाऊँगा क्या?"

फिर वह चिल्ला कर बोला — "और मैं वहॉ क्या पहन कर जाऊँगा?"

टी मैलिस ने उसको शान्त किया — "मेरे प्यारे प्यारे दोस्त, तुम मेरे ऊपर भरोसा रखो। मैंने तुम्हारे लिये एक तरकीब सोची है। मैंने तुम्हारे लिये गाना भी सोच रखा है और पोशाक भी।"

अब क्योंकि बूकी तो उस सबसे ज़्यादा होशियार आदमी के बराबर में कहीं बैठता नहीं था सो उसने अपने दोस्त के ऊपर भरोसा करने के बारे में दो बार भी नहीं सोचा।

चालाक टी मैलिस को तो यह पहले से ही पता था कि ऐसा ही होगा। सो बूकी तो अब जाल में फॅस चुका था, कॉटे में फॅस चुका था, रस्सी में फॅस चुका था।

राजा की दावत के दिन सूरज निकलने के कुछ ही देर बाद बूकी टी मैलिस के घर भागा भागा गया।

टी मैलिस ने एक बड़ी सी जॅभाई लेते हुए उससे पूछा — "अरे इतनी सुबह सुबह तुम यहॉ क्या कर रहे हो?"

बूकी बोला — "मुझे मालूम है कि अभी मुझे अपने गाने का अभ्यास करना है और वहॉ जाने के लिये नहाना धोना भी है पर तुमने मेरे पहनने के लिये क्या निकाल कर रखा है वह ज़रा मैं देख तो लूँ?"

टी मैलिस बोला — "मेरे दोस्त बूकी, मैंने तुम्हारे लिये इस मौके के लिये बहुत ही बढ़िया कोट निकाल कर रखा हुआ है। क्योंकि

यह दावत भेड़ के लिये है तो क्यों न तुम भेड़ की खाल का यह कोट पहनो।"

उसको देख कर तो बूकी की साँस ही रुक गयी। वह बोला — "यह तो बर्फ की तरह सफेद है। और इस पर तो सुन्दर रिबन भी लगे हुए हैं।"

टी मैलिस मुस्कुरा कर बोला — "हॉ, यही तो एक ऐसा कोट है जिसको राजा जरूर देखेगा। पर यह तो जीतने की केवल आधी ही तरकीब है। मैंने तुम्हारे गाने को बोल भी सोच लिये हैं तुम यही गाना गाओगे।"

जैसे ही बूकी ने उस गाने के बोल पढ़े गुस्से की एक लहर उस के चेहरे पर दौड़ गयी। वह बोला — "इन बोलों के बारे में मैं कुछ नहीं कह सकता। मुझे मालूम है कि मैं इस दुनियाँ का सबसे होशियार आदमी नहीं हूँ पर मुझे इनका मतलब समझ में नहीं आ रहा।"

टी मैलिस बोला — "तुमको इन बोलों का मतलब समझने की जरूरत ही नहीं है ये बोल तो बस राजा का ध्यान खींचने के लिये हैं। और मेरा विश्वास करो वे जरूर ही ऐसा करेंगे।"

और एक बार बूकी ने फिर वही गलती की। क्योंकि वह इस दुनियाँ में टी मैलिस के बराबर का सबसे होशियार आदमी नहीं था उसने फिर से उसका विश्वास कर लिया। अब जाल पूरा बिछ चुका था और कुछ न कुछ गड़बड़ होने वाली थी।

हालाँकि दोनों ने उस दावत में एक साथ जाने का प्रोग्राम बनाया हुआ था पर जब बूकी राजा के महल में पहुँचा तो टी मैलिस का कहीं पता नहीं था।

वहाँ बहुत सारे खास खास लोग आये हुए थे। राजा भी था पर बूकी सबको छोड़ते हुए खाने की मेज की तरफ बढ़ गया जहाँ बहुत सारे तरह के खाने सजे हुए थे – याम[38], प्लान्टेन[39], चावल, काशीफल[40] का सूप आदि आदि।

खाना देख कर खाना खाने की जल्दी में उसके कोट का एक रिबन निकल कर नीचे गिर पड़ा पर बूकी ने उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया। वहाँ इतना सारा खाने के लिये था कि बूकी को तो सबसे पहले खाना खाना था।

खाना खाने के अलावा वहाँ पर पीने के लिये भी बहुत कुछ था सो बूकी ने वहाँ पिया भी बहुत।

जब गाने का समय आया तो वह बहुत खुश था। उसने अपनी ऊँची आवाज में गाना गाना शुरू किया। सबने, राजा ने भी, उसके गाने को सुना –

[38] Yam – Yam is a root vegetable very common in West Arica, otherwise in many African countries. It seems it is used here also in Haiti too. See its picture above on top.

[39] Plantain – Plantain is a kind of banana, much larger in size, grown in tropical climate. In India it is very common in Tamilnadu and Kerala. See its picture above in the center.

[40] Translated for the word "Pumpkin". See its picture below the picture of plantain.

राजा की अपनी "जौय" मर गयी है अब वह दुखी हो गया है
पर सारी खबर ही दुख की नहीं है क्योंकि मैं "जौय" से भरा हुआ हूँ
इसलिये चारों तरफ देखो, मेरा कोट, तो तुम जान जाओगे
कि उसमें छोटी सी प्यारी सी बो लगी है और वह सफेद भेड़ की खाल का है

और इसमें कोई शक नहीं कि अगर कोई राजा का ध्यान अपनी तरफ खींचना चाहता था तो बूकी ने वह खींच लिया था।

राजा दहाड़ा — "कौन गा रहा है यह गाना?"

बूकुई बोला — "यह गाना मैं गा रहा हूँ, बूकी, आपको यह गाना पसन्द आया राजा साहब?"

औररर... इसके साथ ही वह छोटा आदमी अपना भेड़ की खाल का कोट दिखाने के लिये चारों तरफ को घूम गया।

इस घूमने में उसके कोट से एक रिबन और गिर गया और इस बार वह राजा के पैरों के पास जा कर पड़ा। राजा ने तुरन्त ही उस रिबन को पहचान लिया वह तो उसने अपनी जौय को कितने प्यार से बाँधा था।

बस उसको देखते ही राजा चिल्ला कर बोला — "तुम? तो वह चोर तुम हो जो मेरे महल में आये और मेरी जौय को चुरा कर ले गये?

अब तुम अपनी इस ज़िन्दगी में और कोई भेड़ नहीं चुरा पाओगे क्योंकि अब तुम्हारी ज़िन्दगी ही इतनी नहीं है जो तुम दूसरी चोरी कर सको। चौकीदार, पकड़ लो इसको।"

इससे पहले कि चौकीदार बूकी को पकड़ते भीड़ में कुछ शोर मचा और टी मैलिस आगे आया और उसने राजा के आगे अपना सिर झुकाया और बोला — "राजा साहब, बिना मेरी सहायता के आप इस चोर को कभी नहीं पकड़ सकते थे।

यह तो मैं था जिसने इसको यहाँ आने के लिये तैयार किया। यह तो मैं था जिसने आपकी "जौय" की मौत को महसूस किया। यह तो मैं हूँ जो अब "जौय"[41] से भरा हुआ हूँ कि आपका चोर पकड़ा गया। और मैं अब अपने इनाम का इन्तजार कर रहा हूँ।"

हालाँकि राजा भी दुनियाँ का सबसे ज़्यादा होशियार आदमी तो नहीं था पर वह बेवकूफ भी नहीं था। उसने टी मैलिस से कहा — "मैं तुमको वही इनाम दूँगा जो तुम्हें मिलना चाहिये।"

उस चालाक ने अपनी मुस्कुराहट छिपाते हुए राजा को फिर से सिर झुकाया। पर उसकी यह मुस्कुराहट बहुत देर तक नहीं रही।

राजा बोला — "मेरे पुजारी ने मुझसे कहा था कि मेरी भेड़ किसी ऐसे आदमी ने चुरायी है जो दुनियाँ का सबसे होशियार आदमी है।

और यह बात हम सब जानते हैं कि बूकी दुनियाँ का सबसे होशियार आदमी नहीं है। वह मेरे महल में आ कर मेरी जौय को कभी चुरा ही नहीं सकता था।

[41] Joy means happiness too and It was the lamb's name also. Here it means that Ti Malis felt the death of joy (happiness) of the King and Ti Malis was filled with Joy lamb because his tummy had that lamb.

पर तुम, ओ टी मैलिस, तुम दुनियाँ के सबसे होशियार आदमी हो। तुम्हीं ने मेरी जौय को चुराया है और तुम ही चोर हो।"

फिर राजा अपने चौकीदारों से बोला — "चौकीदारो, पकड़ लो इस चोर को और इन दोनों को ले जा कर जेल में डाल दो। जब मेरी यह दावत खत्म हो जायेगी तब मैं इन दोनों के बारे में कुछ सोचूँगा। इनको मेरी दी हुई सजा में कोई खुशी तो नहीं मिल सकती पर मैं इनको सजा जरूर दूँगा।"

चौकीदारों ने दोनों चोरों को पकड़ लिया और जंजीरों से बाँध कर उनको जेल में डाल दिया।

बहुत सारी कहानियों में यह कहानी यहीं खत्म हो जाती है सिवाय इसके कि राजा की सजा में उन दोनों ने बहुत कुछ सहा होगा।

पर टी मैलिस तो दुनियाँ का सबसे होशियार आदमी था और हेटी में रिश्वत देना आम बात है सो दोनों दोस्त चौकीदारों को कुछ पैसे यहाँ और कुछ पैसे वहाँ दे कर वहाँ से भाग आये।

वे राजा के उस राज्य से कहीं दूर चले गये जहाँ वे अपनी ज़िन्दगी शान्ति से गुजार सकें। जब वे जेल से भाग रहे थे तो बूकी बोला — "यह आखिरी बार है टी मैलिस जब मैंने तुम्हारी बात मानी है। यह मेरा पक्का वायदा है।" और अगर तुम सोचते हो कि उसने अपना वायदा निभाया होगा तो तुम भी दुनियाँ के सबसे ज़्यादा होशियार आदमी हो।
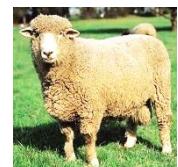
12 टी मैलिस[42]

यह लोक कथा भी उत्तरी अमेरिका महाद्वीप के हेटी देश की लोक कथाओं से ली गयी है और टी मैलिस की एक बहुत ही लोकप्रिय कथा है।

हर आदमी जानता है कि बहुत पुराने समय में इस दुनियाँ में कोई आदमी नहीं था। जंगल में थे केवल पेड़ और जंगली जानवर। वहाँ थे टी मैलिस और उसका बेवकूफ दोस्त बूकी[43]।

अब समय आ गया था जब भगवान को उन जानवरों को अब आदमियों में बदलना था सो उसने जानवरों को बुलाया और कहा कि वे एक घर बनायें जो उनको बारिश और तूफान से बचा सके और उसमें वे सब एक बड़े खुश परिवार की तरह से रह सकें।

जानवर यह सुन कर बहुत खुश हुए। वे इस बदलाव का बेसब्री से इन्तजार करने लगे। वे तुरन्त ही पेड़ों से लकड़ी के लट्ठे काटने चले गये जिससे वे खम्भे बना सकें। कुछ के उन्होंने तख्ते बनाये जो उस घर की दीवारों और छत में लगाये जा सकते।

---

[42] More Folktales – a story about Ti Malice from Haiti, North America. Adapted from the Web Site : http://faculty.webster.edu/corbetre/haiti/literature/folktale.htm
This page gives several things, like riddles, proverbs along with this folktale of Ti malice. No title is given of this tale.

[43] Ti Malice, the most intelligent person of the world and Bouki (or Boukui), his not so intelligent friend.

पर टी मैलिस तो हमेशा से ही आलसी था और उस समय भी आलसी ही था। उसने उन जानवरों की सहायता करने से साफ मना कर दिया।

सब जानवरों ने इस बात पर आपस में सलाह की और इस नतीजे पर पहुँचे कि अगर उसने उनकी सहायता करने से मना कर दिया है तो वे बारिश, धूप और तूफान के समय उसको घर के अन्दर नहीं आने देंगे।

उन लोगों ने जल्दी ही अपना घर बना लिया क्योंकि सभी उस घर में रहने के लिये बड़े उत्सुक थे और उसके लिये काम करने के लिये तैयार थे।

टी मैलिस ने उनका घर जब बनता हुआ देखा तो उसको उनसे जलन होने लगी। वह उसको अन्दर से देखना चाहता था, वह उसके अन्दर जाना चाहता था पर जानवरों ने उसको अन्दर जाने ही नहीं दिया।

बल्कि साथ में उसको यह धमकी और दी कि अगर वह उस मकान के अन्दर घुसा तो वे उसको जादू के डंडे[44] से पीटेंगे। उस जादू के डंडे का एक ही वार उस आदमी को मार देगा जिस पर वह पड़ेगा।

---

[44] Cocomacaque – it is kind of magical stick that whoever will get its blow he will be killed by that.

पर टी मैलिस ने किसी से हारना तो जाना ही नहीं था सो उसने तय कर लिया कि उसको यह काम करना ही है और वह किसी न किसी तरह उस मकान में अन्दर जा कर ही रहेगा।

उसने अपने आपको लकड़ी की एक सीटी में बदला और जब रात हो गयी तो वह उस मकान में घुस गया और चाचा बूकी के बिस्तर के नीचे जा कर लेट गया।

आधी रात को जब सब गहरी नींद सो गये उसने अपनी लकड़ी की सीटी बजानी शुरू की – टूट टूट टूट टूट। उससे ऐसी आवाज आ रही थी जैसे किसी नाव की सीटी बजाते समय आती है।

फिर वह अपनी आवाज बदल कर बोला — "मैं भगवान के घर से आया हूँ और मैं तुम सबसे यह कहने आया हूँ कि अगर तुम लोग तुरन्त ही इस मकान में से बाहर नहीं निकले तो यह मकान तुम्हारे ऊपर गिर पड़ेगा।"

सारे जानवर यह सुन कर डर गये और मकान छोड़ कर एक दूसरे पर गिरते पड़ते एक दूसरे को धक्का देते जंगल की तरफ भाग लिये। पर चाचा बूकी ने तो बस करवट बदली और करवट बदल कर फिर से खर्राटे मारने शुरू कर दिये।

टी मैलिस ने उस सीटी को फिर से बजाना शुरू कर दिया – टूट टूट टूट टूट।

वह फिर बोला — “मैं भगवान के घर से आया हूँ और मैं तुम सबसे यह कहने आया हूँ कि अगर तुम लोग तुरन्त ही इस मकान में से बाहर नहीं निकले तो यह मकान तुम्हारे ऊपर गिर पड़ेगा।”

चाचा बूकुई इस बार थोड़ा परेशान हुआ कि यह कौन उसकी नींद में खलल डाल रहा था पर फिर वह भी उठा और अपने साथियों के साथ जंगल की तरफ चल दिया।

उन दिनों जानवर लोकतंत्र पसन्द होते थे सो अगले दिन सुबह ही उन्होंने एक मीटिंग बुलायी और इस बारे में बात की कि अब इस मकान का क्या किया जाये।

उस मीटिंग में यह तय पाया गया कि एक बिल्ले बिल्ली के जोड़े को उस मकान के अन्दर यह देखने के लिये भेजा जाये कि वहाँ हुआ क्या था। सो एक बिल्ला और एक बिल्ली वहाँ गये तो वे दूर से ही क्या देखते हैं कि वहाँ तो उस मकान के बरामदे में टी मैलिस सीटी बजाते हुए इधर से उधर घूम रहा है।

टी मैलिस ने भी उन बिल्ले बिल्ली को देखा तो उसका दिमाग तुरन्त ही काम पर लग गया कि अब उनसे वह कैसे निबटे।

उसी समय उसको जमीन पर पड़ी एक टूटी बोतल के कुछ टुकड़े दिखायी दे गयी। बस उसके दिमाग में एक विचार कौंध गया कि वह कैसे उस मकान को हमेशा के लिये अपने कब्जे में कर सकता था। उसने टूटी हुई बोतल के उन टुकड़ों को उठा लिया और अपने मेहमानों का इन्तजार करने लगा।

जब वे पास आ गये तो वह बोला — "ओ साथी बिल्लो आओ। कैसे हैं आप लोग?"

बिल्ले बोले — "साथी टी मैलिस हम लोग तो ठीक ही हैं तुम बताओ कि तुम कैसे हो।"

टी मैलिस बोला — "मैं तो अपने दोस्त चाचा बूकी से मिलने आया था पर यहाँ आ कर मैंने देखा कि मकान का दरवाजा तो खुला पड़ा है। सो मैं अन्दर घुस गया पर यहाँ तो मुझे एक मक्खी भी दिखायी नहीं दी। पर अब तुम लोग यहाँ हो तो मेरे ऊपर एक मेहरबानी कर सकते हो।"

बिल्ले को कुछ शक हुआ तो उसने पूछा — "किस तरह की मेहरबानी?"

टी मैलिस ने उनको टूटी बोतल के टुकड़े देते हुए कहा — "तुम ज़रा मेरी हजामत बना दो।"

बिल्ले ने तुरन्त ही उसकी हजामत बना दी। टी मैलिस ने फिर अपनी जीभ बाहर निकाली और बिल्ले से कहा कि वह उसको साफ भी कर दे। उसने कहा — "आज मैं नाचने जा रहा हूँ सो आज मैं साफ सुथरा और चमकदार दिखायी देना चाहता हूँ।"

बिल्ले ने उसकी जीभ भी साफ कर दी। टी मैलिस फिर बोला — "मैं तुम दोनों को अपने साथ नाच में ले जाना चाहता हूँ। पर ओ बिल्ले उसके लिये तुम्हारा चेहरा भी हजामत किया हुआ होना चाहिये और तुम्हारी जीभ भी साफ होनी चाहिये जैसे कि मेरी है।"

बिल्ला बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। पर हमारा यह काम तुम कर दो।"

टी मैलिस बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं।"

बिल्ले ने अपनी जीभ बाहर निकाल दी और टी मैलिस ने एक ही झटके में उसकी जीभ साफ करने के बहाने उसके गले के कुछ हिस्से भी काट दिये। फिर वह तुरन्त ही बिल्ली की तरफ वढ़ा पर वह उससे बच कर निकल गयी।

बिल्ला और बिल्ली दोनों ही वहॉ से तुरन्त भाग लिये। बिल्ला अपने साथियों के पास जंगल पहुॅचा और उनको बताने की कोशिश की कि वहॉ क्या हुआ था पर उसकी जबान से तो केवल कुछ गर्र गर्र की सी आवाज ही निकल पायी क्योंकि उसकी जीभ तो टी मैलिस ने काट ली थी।

वह जल्दी ही मर गया।

उधर बिल्ली यह सब देख कर इतनी डर गयी थी कि वह अपने साथियों के पास वापस ही नहीं गयी। वह जंगल में आगे और आगे भागती ही चली गयी। अब तो वह बस रात को लोगों की मुर्गियॉ चुराने ही बाहर निकलती थी।

यह सब देख कर सारे जानवर तो बहुत ही डर गये और फिर कभी उस बड़े घर की तरफ नहीं लौटे। इसी लिये वे आज भी घरों को पसन्द नहीं करते।

अगर हेटी के लोग यह जानते होते कि इतने दिनों पहले बिल्ले के साथ क्या हुआ था तो वे शायद आज भी टूटे शीशे के टुकड़ों से अपनी हजामत न बना रहे होते।

13 व्ही ई ई[45]

यह लोक कथा भी उत्तरी अमेरिका के हेटी देश की लोक कथाओं से ली गयी है। यह भी वहॉ के मुख्य चरित्र टी मैलिस से ही सम्बन्धित है।

एक दिन एक गर्मी की शाम की बात है कि चाचा बूकी[46] अपने बागीचे में काम कर रहे थे। वह काफी देर तक उसमें खुदाई करते रहे हल चलाते रहे। कुछ देर काम करने के बाद उन्होंने सोचा कि बस अब काफी हो गया अब यहॉ से चलना चाहिये।

"मैंने काफी समय अपने बागीचे में काम कर लिया है अब इस मेहनत के बदले में मैं कुछ पैसा कमाता हूँ।"

सो उन्होंने एक बड़ा थैला भर कर याम और मटर इकट्ठा किये और उनको ले कर बाजार चल दिये।

बाजार जाने से पहले वह कुछ खाना भूल गये तो जैसे ही वह बीच रास्ते में पहुँचे तो उनका पेट भूख के मारे बहुत ज़ोर ज़ोर से बोलने लगा।

---

[45] Wheeeeeeai – a folktale from Haiti, North America. By Amy Friedman and Meredith Johnson. Adapted from the Web Site : http://www.uexpress.com/tell-me-a-story/2015/6/14/wheeeeeeai-a-haitian-folktale

[46] Boukui or Bouki is the foolish friend of Ti Malice

"अब मैं क्या करूँ। जल्दी ही मुझे कुछ खाना ढूँढना पड़ेगा मुझे बहुत भूख लगी है।"

पर वहाँ तो कोई खाने की दूकान थी नहीं सो वह आगे चलते गये चलते गये कि उन्होंने एक आदमी सड़क के बराबर में उकड़ूँ बैठा देखा। वह कुछ खा रहा था। उसको खाते देख कर चाचा बूकी का पेट तो बस भूख के मारे बाहर ही निकल पड़ा।

उन्होंने देखा कि वह आदमी क्या खा रहा था। वह खा रहा था "कैलैलू"[47] यानी केंकड़े का माँस, सूअर का माँस, प्याज और भिंडी मिर्च वाली।

वह उसको बड़ा स्वाद ले ले कर खा रहा था। बीच बीच में वह अपने होठ और उँगलियाँ भी चाटता जा रहा था। इससे चाचा बूकी को साफ लग रहा था कि वह कोई स्वाददार चीज़ खा रहा था।

चाचा बूकी उससे बोले – "कहो कैसे हो?"

उस समय वह उसके केंकड़े के माँस खाने का सपना देख रहे थे और शायद कुछ प्याज खाने का भी। उनको लग रहा था कि शायद वह आदमी उस कटोरे में से कुछ खाना उनको भी दे दे।

पर इत्तफाक से वह आदमी बहरा था उसने चाचा बूकी की बात सुनी ही नहीं सो उसने उनको कोई जवाब भी नहीं दिया। वह तो बस अपना खाना खाने में इतना मस्त था कि उसने चाचा बूकी को देखा तक नहीं।

---

[47] Calalou – a Haitian dish

सो जब चाचा बूकी को उस आदमी से कोई जवाब नहीं मिला तो वह उसके और पास आये और उससे पूछा — "जनाब क्या आप मुझे बता सकते हैं कि यह जो इतना अच्छा खाना आप खा रहे हैं ऐसा खाना मुझे कहाँ से मिल सकता है?"

उस आदमी ने फिर उनको कोई जवाब नहीं दिया। चाचा बूकी के मुँह में अब तक पानी आने लगा था। उन्होंने उससे फिर पूछा — "आप मुझे बतायें कि यह जो इतनी स्वादिष्ट चीज़ इतना आनन्द ले ले कर आप खा रहे हैं इसका नाम क्या है।"

इत्तफाक से तभी उस आदमी के मुँह में तेज़ मिर्च आ गयी। वह इतनी तेज़ थी कि उसको लगा जैसे उसकी जबान में आग ही लग गयी हो और वह बाहर निकल पड़ेगी। सो उसने अपना मुँह खोला और उसके मुँह से निकला व्ही ई ई ई।

यह सुन कर चाचा बूकी बोले "धन्यवाद। पर मैंने ऐसे किसी खाने का नाम कभी नहीं सुना।" और वह वहाँ से जल्दी जल्दी बाजार की तरफ चल दिये।

वह खाना उनको देखने में इतना ज़्यादा अच्छा लग रहा था कि उन्होंने सोच रखा था कि बाजार जा कर वह भी उसी खाने का एक कटोरा खरीदेंगे। या फिर उनके दस सिक्के जितना भी खाना खरीद सकें।

जब चाचा बूकी बाजार पहुँचे तो उन्होंने जल्दी जल्दी अपने याम और मटर बेचीं और फिर कोई खाने की दूकान ढूँढने लगे। हर

खाने की दूकान पर वह अपने सिक्के निकालते और दूकान वाले से कहते "मुझे थोड़ी सी व्ही ई ई ई चाहिये।"

और जब भी वह किसी दूकान वाले से यह कहते तो वह दूकान वाला पहले तो खूब हॅसता फिर कहता "तुम पागल हो गये हो क्या?"

इस तरह से सब लोग उनकी बातों पर हॅसते और उनके जाने के बाद आपस में उनकी बात करते।

टी मैलिस ने भी यह कहानी सुनी। सो जब उसको यह पता चला कि चाचा बूकी व्ही ई ई ई नाम का खाना ढूँढ रहे हैं तो उसके दिमाग में एक विचार आया।

वह चाचा बूकी से पहले पहले ही उनके घर की तरफ पहुँच गया और उस मोड़ पर जहॉ से चाचा बूकी के घर जाते थे वहॉ से पास की नदी की तरफ चल दिया। वहॉ जा कर उसने कैक्टस[48] के कुछ पत्ते तोड़े और उनको एक थैले में भर लिया।

जब तक चाचा बूकी वापस घर आये तो उनके दिमाग में व्ही ई ई ई के अलावा और कुछ भी नहीं था। उनका पेट बोल रहा था

[48] Cactus is an ornamental plant mostly of leaves, available wide range of shapes and sizes. There are very few species which have flowers and never the fruit. Most of the plants are very beautiful and are used indoors to decorate the house and gardens. They do not need much water and thus can live for several days without watering them. See the picture of one of its kinds with flower.

और मुँह में पानी आ रहा था। वह तो बस व्ही ई ई ई के बारे में ही सोच रहे थे।

सारे रास्ते वह व्ही ई ई ई के बारे में ही सोचते चले आ रहे थे। वह तो बस यही सोचते चले आ रहे थे कि व्ही ई ई ई खाने में कैसी होती होगी।

जैसे ही वह अपने घर के मोड़ पर आये तो वहाँ उन्होंने टी मैलिस को देखा। टी मैलिस बोला — "गुड डे[49] चाचा बूकी। कैसे हो?"

चाचा बूकी बोले — "मैं वैसे तो ठीक हूँ पर बस मैं व्ही ई ई ई खाने के लिये बहुत बेताब हूँ। क्या तुम्हें पता है कि वह मुझे कहाँ मिल सकता है टी मैलिस।"

टी मैलिस बोला — "हाँ मुझे मालूम है।"

चाचा बूकी अभी भी अपने घर की तरफ चलते जा रहे थे। उसी समय टी मैलिस ने उन कैक्टस के पत्तों के ऊपर कुछ सन्तरे रख दिये। और उन सन्तरों के ऊपर रख दिया एक अनन्नास। और अनन्नास के ऊपर रख दिया एक आलू।

टी मैलिस फिर बोला — "मेरे पास थोड़ा सा व्ही ई ई ई इस थैले में है। लो यह थैला लो।"

चाचा बूकी को अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हुआ कि उनको व्ही ई ई ई इतनी जल्दी मिल जायेगा। टी मैलिस ने जितनी

[49] A normal greeting among English speaking people.

भी चालें अब तक उनके साथ खेली थी वह तो उनके दिमाग से निकल गयी और उन सबको भूल कर उन्होंने उस थैले में हाथ डाल दिया।

उनके हाथ में सबसे पहले आलू आया। वह बड़ी नाउम्मीदी से बोले — "यह तो व्ही ई ई ई नहीं है।"

टी मैलिस बोला — "तुम फिर से हाथ डालो।" सो चाचा बूकुई ने उस थैले में फिर से हाथ डाला तो अबकी बार अनन्नास निकला। वह फिर बड़ी नाउम्मीदी से बोले — "यह भी व्ही ई ई ई नहीं है।"

लेकिन उन्होंने फिर से थैले में हाथ डाला तो इस बार कुछ सन्तरे उनके हाथ में आये। अबकी बार वह गुस्से से बोले "यह भी व्ही ई ई ई नहीं है टी मैलिस। क्या तुम मेरा बेवकूफ बना रहे हो?"

टी मैलिस मुस्कुराते हुए बोला — "तुम्हारे साथ मैं ऐसा कभी नहीं करूँगा चाचा बूकी। तुम एक बार इस थैले में हाथ और डालो। मुझे यकीन है कि इस बार जो कुछ तुम निकालोगे तुम उसे देख कर आश्चर्यचकित रह जाओगे।"

सो चाचा बूकी ने एक बार फिर थैले में अपना हाथ डाला तो अबकी बार उनके हाथ में कैक्टस के पत्ते आये। उसके तेज़ कॉटे उसके हाथ में चुभ गये। वह उनकी चुभन महसूस कर के उछल पड़े और उनके मुँह से निकला "व्ही ई ई ई"।

यह सुन कर टी मैलिस मुस्कुरा कर बोला — "अब तुम्हें पता चला कि यह व्ही ई ई ई क्या है? अब तुमको अपना व्ही ई ई ई मिल गया न?"

यह सुन कर चाचा बूकी ज़ोर से हॅस पड़े और उनके साथ साथ हॅस दिया टी मैलिस भी।

14 आधा मुर्गा[50]

आधे मुर्गे की यह लोक कथा उत्तरी अमेरिका महाद्वीप के पुअर्टो रिको देश में कही सुनी जाती है।

एक बार की बात है कि एक सुन्दर मुर्गी ने कई चूज़ों को जन्म दिया पर उनमें से एक चूज़ा बाकी सब चूज़ों से बहुत अलग था। उसकी केवल एक ही ऑख थी, एक ही टॉग थी और एक ही पंख था[51]।

पर मॉ मुर्गी अपने उस आधे मुर्गे को अपने दूसरे बच्चों से ज़्यादा प्यार करती थी क्योंकि वह उसके लिये बहुत दुखी थी। उधर क्योंकि दूसरे लोग उस पर ज़्यादा ध्यान देते थे इसलिये वह भी हर एक से चिढ़ कर बहुत जल्दी गुस्सा हो जाता था।

वह अपने भाई बहिनों के साथ भी ठीक से गर्दन नहीं करता था। अगर दूसरे लोग उसके साथ हॅसी करते या खेलते तो वह यह समझता कि वे लोग उसकी हॅसी उड़ा रहे हैं।

---

[50] Half a Chick – a folktale from Puerto Rico, North America. Adapted from the Web Site : http://www.yale.edu/ynhti/curriculum/units/1993/2/93.02.12.x.html#c
Adopted, retold and written by Doris M Vazquez

[51] J. Alden Mason and Aurelio M Espinosa found three versions of the "El Medio Pollito" story that were being told in Puerto Rico in the beginning of this century. These versions were European and probably were brought to the island from Castile. RS Boggs in his article "The Halfchick Tale in Spain and France" summarizes the story as it was basically being told in Puerto Rico, but also found a literary version that was being used in schools in the United States. The story is retold in "The Green Fairy Book" by Andrew Lang from Fernan Caballero. The version that I have translated seems to be closer to this version than to the original Castilian story. Apparently this version was introduced in Puerto Rico after the island became a possession of the United States in 1898.

और अगर सुन्दर चूज़े उसको गुस्से और नफरत से देखते तो उसको लगता कि उनको कोई ठीक से समझा नहीं रहा कि उनको उसके साथ ऐसा नहीं करना चाहिये।

एक दिन तंग आ कर वह अपनी माँ से बोला कि वह मुर्गीखाना उसके लिये बहुत छोटा था और उस जैसे चूज़े के लिये ठीक भी नहीं था सो वह किसी बड़े शहर जा रहा था ताकि वहाँ वह खास बड़े बड़े लोगों के साथ रह सके।

यह सुन कर माँ मुर्गी तो काँप गयी क्योंकि वह जानती थी कि बाहर तो हर कोई उसका मजाक बनायेगा और वह वहाँ पर बहुत दुखी होगा।

सो वह उससे बोली — "यह बेवकूफी का विचार तुम्हारे दिमाग में कहाँ से आया बेटा? तुम्हारे पिता ने तो इस बारे में कभी सोचा ही नहीं। और न यह मुर्गीखाना ही कभी छोड़ा और हम लोग तो यहाँ बहुत खुश हैं। तुम ऐसी कौन सी जगह जा रहे हो जहाँ तुमको यहाँ से ज़्यादा प्यार मिलेगा?"

आधा मुर्गा बोला — "मैं वहाँ जाऊँगा जहाँ राजा और रानी रहते हैं। मैं उनसे मिलूँगा। यहाँ पर तो हर एक मुझसे बहुत नीचा और बेवकूफ है।"

माँ मुर्गी उसकी बातें आगे नहीं सुन सकी और बोली — "बेटे, क्या तुमने कभी अपनी शक्ल तालाब में देखी है? तुम्हारे केवल एक

पंख है, एक टॉग है और एक ऑख है। यह तुम्हारे लिये बड़े अपमान की बात है क्योंकि तुम्हारे पिता तो बहुत सुन्दर थे।"

आधा मुर्गा बोला — "मेरे पिता की सुन्दरता की बात मत करो। यह तुम्हारी गलती है जो मैं इस तरह का दिखायी देता हूं। वह तुम्हारा अंडा था....।"

मॉ मुर्गी ने दुखी हो कर अपना सिर इतना झुका लिया जब तक कि उसकी चोंच जमीन से नहीं छू गयी। वह अपने आपको बहुत मजबूर महसूस कर रही थी कि वह अपने उस बेटे को उसका दूसरा आधा हिस्सा नहीं दे पा रही थी।

वह धीरे से बोली — "बेटे मुझे माफ कर दो हालॉकि यह मेरी गलती नहीं है। तुम्हारा वाला अंडा मेरा आखिरी अंडा था जो मैंने दिया। हो सकता है यही इसकी वजह हो....।"

आधे मुर्गे ने उसे बीच में टोका — "मैं किसी बड़े शहर में जाऊॅगा और वहॉ जा कर कोई डाक्टर ढूॅढूंगा जो मेरा औपेरेशन कर के मेरे शरीर के वे हिस्से लगा दे जो मेरे शरीर में नहीं हैं। जितनी जल्दी होगा उतनी जल्दी मैं यहॉ से चला जाऊॅगा।"

मॉ मुर्गी ने देखा कि उस आधे मुर्गे ने अपना मन बना लिया था और वह इस बारे में कोई बात नहीं सुनना चाहता था सो उससे इस बारे में कोई भी बात करना बेकार था।

इसलिये उसने उसको कुछ सलाह देने का विचार किया।

वह बोली — "मेरे प्यारे बेटे, अगर तुमने अपना मन यह मुर्गीखाना छोड़ने का और बाहर जाने का बना ही लिया है तो जो मैं कहती हूँ उसको ध्यान दे कर सुनो।

पहली बात – कभी भी किसी चर्च के सामने से मत गुजरना। क्योंकि सेन्ट पीटर[52] और वहाँ के दूसरे सेन्ट मुर्गों को पसन्द नहीं करते।

दूसरी बात – रसोइयों से दूर रहना। वे तुम्हारे सबसे बड़े दुश्मन हैं। वे मुर्गों की गर्दन मरोड़ने में बहुत होशियार होते हैं।"

फिर उसने उसको अपना आशीर्वाद दिया और सेन्ट राफेल[53] से प्रार्थना की कि वह उसकी रक्षा करे। आखिर में उसने उससे कहा कि जाने से पहले वह अपने पिता का आशीर्वाद भी ले ले हालाँकि उन दोनों में बिल्कुल भी नहीं पटती थी।

आधा मुर्गा अपने पिता से मिलने गया, उसके पैर चूमे और उसका आशीर्वाद माँगा। उसका पिता भी उसकी हालत पर बहुत तरस खाता था इसलिये वह भी उसे बहुत प्यार करता था। इस विदाई के समय में उसने उसके साथ बहुत ही कोमलता से बर्ताव किया।

माँ मुर्गी छिप कर बहुत रोयी। वह नहीं चाहती थी कि उसका बेटा उसको रोते हुए देखे। आधे मुर्गे ने अपना एक पंख

[52] Saint Peter – Christians' one of the very famous saints' name
[53] Saint Raphael – Christians' one of the very famous saints' name

फड़फड़ाया, तीन बार बॉग लगायी और दुनियॉ जीतने के लिये मुर्गीखाने से बाहर कूद गया।

कुछ दूर सड़क पर चलने के बाद वह एक नदी के पास आ पहुॅचा जो करीब करीब पूरी सूखी हुई थी। केवल बीच में बहुत थोड़ा सा पानी बह रहा था।

वह थोड़ा सा बहता हुआ पानी उस आधे मुर्गे से बोला — "दोस्त, मैं इतनी कमजोरी महसूस कर रहा हूॅ कि मेरे सामने जो शाखें पड़ी हैं मैं उनको अपने रास्ते से नहीं हटा सकता और मैं उनका चक्कर काट कर जाने के लिये बहुत थका हुआ हूॅ। क्या तुम उनको मेरे रास्ते से हटा सकते हो ताकि में आसानी से बह सकूॅ?

तुम इस काम के लिये अपनी चोंच का इस्तेमाल कर सकते हो। मैं तुमसे इस सहायता की भीख मॉगता हूॅ।"

उस पानी की पतली सी धार की तरफ देख कर आधे मुर्गे ने उसमें कोई रुचि न दिखाते हुए कहा — "मैं तुम्हारे रास्ते से वे शाखाएॅ हटा तो सकता हूॅ पर मैं हटाना नहीं चाहता। तुम तो बहुत ही बेकार की बहुत छोटी सी नदी हो।" और यह कह कर वह अपने रास्ते चला गया।

पानी की वह पतली सी धार चिल्लायी — "ओ बेवकूफ, देखना एक दिन तुमको मेरी सहायता की जरूरत पड़ेगी।"

थोड़ी दूर आगे चलने के बाद उस आधे मुर्गे को बहुत धीरे चलती हुई हवा मिली।

वह कमजोर हवा उस आधे मुर्गे से बोली — "ओ भले आधे मुर्गे, मैं यहाँ लेटी हुई हूँ उठ नहीं सकती। मैं जो बहुत ताकतवर हूँ उठ कर पानी में लहरें उठाना चाहती हूँ, पेड़ों की शाखाओं में उलझना चाहती हूँ।

क्या तुम मुझको अपनी चोंच से उठा सकते हो? अगर तुम मुझको अपने पंख से थोड़ा सा उठा देते तो मैं बह जाती। यहाँ की गर्मी मुझे मारे डाले रही है।"

आधा मुर्गा गुस्से से चिल्लाया — "ओ गूँगी हवा, तुमको वही मिल रहा है जो तुमको मिलना चाहिये। तुम वहीं रहो जहाँ तुम हो। तुमने मुझे पहले से ही बहुत तंग किया हुआ है।

तुमने मेरे पंख पहले ही अलग अलग कर रखे हैं। क्योंकि मेरी एक ही टाँग है इसलिये तुमने मुझको दीवार की तरफ धकेल दिया है। मैं तुम्हारी वजह से पहले से ही बहुत घायल हो चुका हूँ, ओ बुरी नीच हवा।" और अपने रास्ते चल दिया।

हवा जो अपने आप जमीन से नहीं उठ सकती थी चिल्लायी — "हर मुर्गा पकता है। देखना तुम भी पकोगे। तुम बहुत ही बेवकूफ हो।"

वह छोटा आधा मुर्गा वहाँ से थोड़ी दूर चलने के बाद एक ऐसे मैदान के पास आया जहाँ आग लगी हुई थी। वहाँ से धुँआ बहुत

ऊँचा उठ रहा था और सब जगह आग ही आग दिखायी दे रही थी।

वह आग की लपटों के थोड़ा पास आया तो उसको एक बहुत ही बारीक सी आवाज सुनायी पड़ी — "ओ आधे मुर्गे, दोस्त, मैं एक बहुत ही छोटी सी चिनगारी हूँ जो बुझना नहीं चाहती। मैं पहाड़ के ऊपर जाना चाहती हूँ।

अगर मैं बुझ गयी तो मैं कभी भी ऊपर से आसमान नहीं देख पाऊँगी। सो मेरे ऊपर थोड़ी सी सूखी घास डाल दो ताकि मैं फिर से लपटों में बदल जाऊँ। मेरे ऊपर दया करो ओ आधे मुर्गे।"

आधा मुर्गा बोला — "मैं कोई खेत पर काम करने वाला आदमी नहीं हूँ जो तुम्हारे लिये घास उठा कर लाऊँ। भाग जाओ यहाँ से।"

आग ने अपनी आखिरी ताकत इकट्ठी की और चिल्लायी — "मैं तुझे याद रखूँगी ओ आधे मुर्गे। देख लेना किसी दिन तुझे मेरी जरूरत जरूर पड़ेगी।"

आधे मुर्गे को इतना गुस्सा आया कि उसने उस चिनगारी पर अपना एक अकेला पैर पटका और उसको राख में बदल कर अपने रास्ते चल दिया।

जब वह बड़े शहर में आया तो पहला काम तो उसने यही किया कि उसने अपनी माँ का कहना नहीं माना। वह सीधा चर्च के

दरवाजे पर गया और ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगा ताकि सेन्ट पीटर गुस्सा हो जायें।

फिर वह महल की तरफ चला। उस महल के सामने जिसमें राजा और रानी रहते थे उनके पहरेदारों ने उसको रोकने की कोशिश की।

ज़िन्दगी मे पहली बार आधा मुर्गा डरा क्योंकि उन पहरेदारों के हाथों में बन्दूकें थीं सो बजाय रुकने के वह घूम गया और बराबर के दरवाजे से महल के अन्दर घुस गया।

एक बार वह महल के अन्दर पहुँच गया तो फिर तो वह आधा मुर्गा इधर उधर कूदने लगा और कूदते कूदते एक बड़े से रसोईघर में पहुँच गया जहाँ आदमियों ने ऊँचे ऊँचे टोप पहन रखे थे। उसने सोचा कि वे राजा और रानी थे।

वह सीधा उनके पास चला गया। उनमें से एक रसोइये ने उसको पकड़ लिया और उसकी गरदन ऐंठ दी।

फिर उस रसोइये ने अपने असिस्टैन्ट को बुलाया और कहा — "मुझे थोड़ा सा गर्म पानी दो ताकि मैं इसके पंख साफ कर सकूँ।"

रसोइये के असिस्टैन्ट ने रसोइये को गर्म पानी दिया और रसोइये ने उस आधे मुर्गे को उस गर्म पानी में डाल दिया। आधा मुर्गा चिल्लाया — "ओ पानी, मेरे ऊपर दया करो मुझे इतनी ज़ोर से मत जलाओ।"

पानी ने पूछा — "क्या तुमने मेरे ऊपर दया की थी जब मैंने तुमसे अपने रास्ते में से शाखाएँ हटाने के लिये कहा था? तुमको मेरी याद है न?"

थोड़ी ही देर में रसोइये ने उसके पंख साफ किये और उसको ओवन में रखा तो आधा मुर्गा उस आग से बोला — "ओ आग, मेरी अच्छी दोस्त, तुम तो बहुत ताकतवर हो और हर चीज़ को नष्ट करने वाली हो, मेहरबानी कर के मेरे ऊपर दया करो, मुझे मत जलाओ।"

आग बोली — "ओ बेवकूफ, अब तुम ठीक बात पर आये हो। तुमको मेरी याद नहीं है क्या? मैं वह छोटी सी चिनगारी थी जिसने तुमसे सहायता माँगी थी कि मुझे मरने से बचा लो और तुम मेरे ऊपर अपना एक अकेला पंजा पटक कर चले गये थे। अब जलो।" और आग ने उसको भून भून कर काला कर दिया।

रसोइये ने जब उस आधे मुर्गे को जला हुआ देखा तो उसने उसको गालियाँ दीं और उसको खिड़की से बाहर फेंक दिया। हवा ने उसे रास्ते में ही पकड़ लिया और उसको उड़ा कर ऊपर ले चली।

आधा मुर्गा रो कर बोला — "ओ प्यारी हवा, मैं जमीन पर मरना चाहता हूँ। तुम मुझे कहीं पर भी गिरा दो, पेड़ के नीचे, पर

मुझको बहुत ऊपर मत ले जाना और वहाँ से गिराना भी नहीं। मैं पहले ही बहुत सह चुका हूँ। मैं मर जाऊँगा।"

हवा गुस्सा हो कर बोली — "यह तुम क्या कह रहे हो?"

और वह हवा उसको हवा में घुमाते हुए ऊपर की तरफ ले चली।

वह फिर बोली — "तुम्हारी तो याद खराब है। क्या तुमको याद नहीं कि जब मैंने तुमसे कहा था कि तुम मुझको जमीन से ज़रा सा ऊपर उठा दो तब क्या तुमने मेरी सहायता की थी? नहीं की थी न? बल्कि उलटे तुमने मेरा अपमान किया था।"

उसके बाद हवा ने और ऊपर और और ऊपर आसमान की तरफ उड़ना शुरू किया। पहले घरों के ऊपर फिर बिल्डिंगों के ऊपर और फिर चर्च के ऊपर।

जैसे ही वह चर्च के ऊपर पहुँची वहाँ से उस आधे मुर्गे को सेन्ट पीटर ने पकड़ लिया और उसको चर्च पर लगे डंडे पर बिठा दिया और उसको एक मौसम बताने वाले मुर्गे में बदल दिया।

और अब वह आधा मुर्गा अपनी नीचता के लिये और अपने आपको बचाने के लिये हवा, धूप और बारिश के सहारे पर जीता है और चारों तरफ घूमता रहता है, घूमता रहता है, घूमता रहता है।

15 पोआस की सुनहरी आवाज[54]

यह लोक कथा उत्तरी अमेरिका के कोस्टा रिका देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

स्पेन के लोगों के आने से बहुत पहले पोआस ज्वालामुखी[55] के आस पास की जगह बहुत तरह की सुन्दर चिड़ियों के लिये बहुत मशहूर थी और साथ में एक बहुत सुन्दर लड़की के लिये भी।

लेकिन हर आदमी इस बात को बिना किसी शक के मानता था कि उस सुन्दर लड़की और रुआल्डो चिड़े[56] की दोस्ती सबसे ज़्यादा सुन्दर थी।

वे दोनों तभी से एक साथ रहते थे जबसे उस लड़की ने उस चिड़े को एक शिकारी के जाल से बचाया था। चमकीले रंगों वाला रुआल्डो तो हमेशा के लिये उसका गुलाम हो गया था।

उस दिन के बाद से जहाँ भी वह लड़की जाती रुआल्डो की मीठी आवाज में उसका गाना उसके साथ रहता।

---

[54] The Golden Voice of Poas - a folktale from Costa Rica, North America. Adapted from the Web Site : http://www.themuralman.com/costa_rica/costa_rica_folk_tale.html
Collected and retold by Phillip Martin

[55] Poas Volcano is a very famous volcano in central Costa Rica. It has erupted 39 times since 1828. Now there are two crater lakes there. See its picture above.

[56] Rualdo – the name of the bird

बहुत सारे लोग पूछते कि उनमें से कौन ज़्यादा सुन्दर था? – वह लड़की, या उस चिड़े का मीठा गीत, या फिर उस चिड़े के रंगीन पंख। पर बहुत सारे लोग इस बात की परवाह भी नहीं करते। वे सबका एक सा आनन्द लेते।

शमन[57] जो किसी भी चीज़ को पसन्द नहीं करता था वह भी जब उनको देखता तो मुस्कुरा देता।

पर फिर भी पोआस में सब कुछ शान्त और सुरक्षित नहीं था।

धरती के नीचे ज्वालामुखी हिल रहा था और खड़क रहा था। धुँआ उसके गड्ढे में से निकल रहा था। धरती हिलने लगी थी और लावा बाहर निकल कर पहाड़ से नीचे की तरफ बहने वाला था।

बूढ़े शमन को ज्वालामुखी के खतरों का पता था। जब वह एक छोटा लड़का था तब उसने देखा था कि ज्वालामुखी जब गुस्सा होता था तो वह क्या कर सकता था।

वह ज्वालामुखी को फिर से गुस्सा नहीं देखना चाहता था सो उसने निश्चय किया कि अबकी बार वह देखेगा कि वह पोआस की आत्मा को शान्त रखने के लिये क्या कर सकता था।

[57] Shaman – a priest or priestess who uses magic for the purpose of curing the sick, divining the hidden, and controlling events. A doctor is also called Shaman in Native Indian's language. Read about him in "Haida Tribe: beliefs" by Sushma Gupta in Hindi. Available from : hindifolktales@gmail.com

बूढ़ा शमन ज्वालामुखी के गड्ढे के किनारे की तरफ चला गया पर पोआस में से निकलती आग की लपटों ने उसको पीछे धकेल दिया और ज्वालामुखी की आत्मा बहुत ज़ोर से चिल्लायी।

बूढ़ा शमन चिल्लाया — "तुम इतनी गुस्सा क्यों हो? तुम्हीं बताओ कि मैं अपने गाँव को तुमसे बर्बाद होने से बचाने के लिये तुम्हारे लिये क्या करूँ?"

गड्ढे में से और ज़्यादा धुँआ निकला और ज्वालामुखी की आत्मा फिर से चिल्लायी — "केवल एक चीज़ मेरे गुस्से को शान्त कर सकती और वह है बलि।"

शमन बोला — "ठीक है ओ आत्मा। मैं अभी कुछ जानवर इकट्ठा करता हूँ और तुम्हारे लिये बलि का इन्तजाम करता हूँ।"

"मुझे जानवरों की बलि नहीं चाहिये। मुझे तो वह लड़की चाहिये जो रुआल्डो के साथ घूमती है।"

और इसके साथ ही आग की कुछ और लपटें उस ज्वालामुखी के गड्ढे के बीच में से निकलीं। बूढ़ा शमन बेचारा इतना डर गया कि वह ज्वालामुखी की आत्मा से कोई भी बहस करने की हिम्मत ही नहीं कर सका। वह इस दुखी खबर के साथ गाँव लौट आया।

जब उस लड़की को यह सब बताया गया तो वह लड़की बहादुर होने का दावा करती हुई शमन के साथ चुपचाप उस ज्वालामुखी के गड्ढे के किनारे की तरफ चल दी।

पर जब उसने उस गड्ढे में भभकती हुई आग और उबलता हुआ ज्वालामुखी देखा तो उसकी सारी हिम्मत टूट गयी। उसने वहाँ से पहाड़ के नीचे की तरफ भाग जाने की कोशिश की पर उस बूढ़े शमन ने उसको कस कर पकड़ रखा था।

इस बीच रुआल्डो ने भी उस लड़की का साथ बिल्कुल नहीं छोड़ा था। जब वह लड़की अपनी ज़िन्दगी के लिये लड़ रही थी बस तभी सब कुछ बदल गया। वह चिड़ा ज्वालामुखी की भभकती हुई आग की तरफ बढ़ा।

न तो उसकी आग, न तो उसकी गर्मी, न तो उसका धुँआ और न ही उसकी आग की लपटें उसको वहाँ जाने से रोक सकीं। वह पोआस की आत्मा से चिल्ला कर बोला — "तुम मेरे दोस्त को मत लो। उसकी बजाय तुम मेरी बलि ले लो।"

एक पल के लिये ज्वालामुखी की आग कुछ ठंडी पड़ी पर फिर एक लपट उठी और पोआस की आत्मा बोली — "तुम मुझे क्या दे सकते हो ओ चिड़े जिससे यह बलि रुक जाये।"

रुआल्डो बोला — "मैं तुमको अपनी आवाज देता हूँ। जो कोई इसे सुनता है वही यह कहता है कि यह तो बहुत ही मीठी है। तुम मेरी यह आवाज ले लो पर मेरे दोस्त को छोड़ दो।"

फिर उस चिड़े ने उस ज्वालामुखी की आत्मा के लिये एक गाना गाया। यह वह गाना था जो वह उस लड़की के लिये उसके प्यार में गाया करता था जिस लड़की ने उसकी जान बचायी थी।

उसकी आवाज में वाकई जादू था। उस आवाज को सुनते ही ज्वालामुखी की आग कम होने लगी। गाते गाते रुआल्डो की आँखों से आँसू बहने लगे।

कुछ का कहना है कि उसकी आवाज के जादू ने उस ज्वालामुखी की आत्मा को भी रुला दिया था। उन आँसुओं ने ज्वालामुखी के उबलते हुए लावा को शान्त कर दिया और उसकी लपटों को बुझा दिया।

रुआल्डो के आँसू पहाड़ के नीचे की तरफ बह निकले और उन्होंने वहाँ बोटोस लैगून[58] बना दिया जो आज भी देखा जा सकता है। और जब उसके आँसू रुके तो पोआस की आत्मा ने रुआल्डो की बलि मान ली थी।

बहुत सारे लोग तो यह सोचते थे कि एक चिड़े के लिये अपनी आवाज की इस तरह बलि देना बहुत बड़ी कीमत थी पर रुआल्डो ने इस बारे में कभी सोचा ही नहीं। उसका उद्देश्य तो बस अपने बचाने वाले को बचाना था।

वह और वह लड़की अभी भी पहले की तरह ही साथ साथ रहते थे पर उस दिन के बाद से रुआल्डो कभी अपने दोस्त के लिये कोई गाना नहीं गा पाया। हाँ उसके बाद वह लड़की अपने चुप दोस्त के लिये गाना जरूर गाने लगी थी।

[58] Botos Lagoon – Lagoon is an area of shallow water separated from the sea by low sandy dunes.

16 सुनहरी मछली[59]

यह लोक कथा उत्तरी अमेरिका के निकारागुआ[60] देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

निकारागुआ देश के किसी गॉव में एक बूढ़ा मछियारा रहता था। वह बहुत गरीब था। एक दिन उसने सोचा — "मैं गरीब हूँ तो क्या हुआ, मैं रोज मछली पकड़ने जाता तो हूँ।" और यह सोच कर ही उसके चेहरे पर मुस्कुराहट आ गयी।

पर इससे उसकी पत्नी नहीं मुस्कुरायी, खास कर के जब जबकि वह किसी भी दिन मछली पकड़ कर नहीं लाता था। वह मछली पकड़ने जाता जरूर था पर उसके हाथ कोई मछली लगती ही नहीं थी।

एक दिन उसकी पत्नी चिल्लायी — "चार दिन हो गये हैं, सुनते हो? चार दिन। चार दिन हो गये हमको बिना मछली खाये हुए। तुम क्या सोचते हो कि तुम अगर मुझे मछली ला कर नहीं दोगे तो मैं क्या मैं तुम्हारे लिये खाना बना दूँगी?"

और फिर आया पॉचवा दिन। खैर, पर यह पॉचवॉ दिन कोई मामूली दिन नहीं था। हालॉकि आज भी वह मछियारा बिना मछली

---

[59] The Golden Fish - a folktale from Nicaragua, North America. Adapted from the Web Site : http://www.themuralman.com/nicaragua/nicaragua_folk_tale.html
Collected and retold by Phillip Martin

[60] Nicaragua country is in Central America but still is in the continent of North America

पकड़े ही वापस आ गया था पर फिर भी आज का दिन कोई मामूली दिन नहीं था। यह उस मछियारे की पत्नी को बाद में पता चला।

जब पत्नी ने मछियारे के हाथ में मछली नहीं देखी तो वह फिर चिल्लायी — "आज पॉचवॉ दिन है और आज भी कोई मछली नहीं है। पॉच दिन बिना मछली के? उफ़।"

उस बूढ़े मछियारे ने बीच में ही अपनी पत्नी की बात काटी — "इससे पहले कि तुम आगे कुछ और बोलो मैं तुमको अपने आज के दिन के बारे में बता दूँ।

आज सचमुच में मैंने एक मछली पकड़ी थी – एक बहुत ही सुन्दर सुनहरी मछली। और तुम सच मानो या नहीं, पर वह मछली मुझसे बोली थी। उसने मुझसे कहा कि अगर तुम मुझे वापस समुद्र में फेंक दोगे तो तुमको कुछ इनाम मिलेगा।"

"तो फिर तुमने क्या किया?"

"मैं और क्या करता, मैंने उसको समुद्र में वापस फेंक दिया ताकि मुझे इनाम मिल सके।"

पत्नी ने पूछा — "फिर तुमने उससे किस तरह का इनाम मॉगा?"

"कुछ नहीं।"

पत्नी चिल्लायी — "कुछ भी नहीं? पर क्यों? क्यों नहीं मॉगा तुमने उससे इनाम? मुझे तो न यहॉ कोई इनाम दिखायी दे रहा है, और न ही कोई मछली और न ही कोई शाम का खाना। मुझे तो यहॉ केवल एक बेवकूफ आदमी दिखायी दे रहा है।

क्या तुमको दिखायी नहीं दे रहा कि रसोई की आलमारी में कुछ भी खाना नहीं है? कोई रोटी या चीज़[61] का टुकड़ा भी नहीं है। क्या तुम्हारे दिमाग में इतना भी नहीं आया कि तुम कुछ खाना ही मॉग लेते उससे? अब तुम वापस समुद्र जाओ और जा कर उससे इनाम मॉगो।"

सो उसने वही किया। बेचारा मछियारा चुपचाप वापस समुद्र की तरफ चल दिया।

वहॉ जा कर वह अपने मुॅह पर दोनों हाथों का एक प्याला बना कर चिल्लाया — "मुझे मेरा इनाम दो ओ सुनहरी मछली, मेरी एक सादी सी इच्छा पूरी कर दो।"

सुनते ही वह सुनहरी मछली समुद्र के किनारे से बाहर निकली और मछियारे के पैरों पर गिर पड़ी। उसका शरीर चमक रहा था। वह बोली — "जब मैंने तुमसे वायदा किया था कि तुमको कोई इनाम मिलेगा तो मेरा वायदा सच्चा था। बोलो तुमको क्या इनाम चाहिये?"

[61] Cheese – a kind of processed Paneer. It is a very common food item in Western countries.

मछियारा बोला — "मेरी पत्नी ने कहा है कि मैं तुमसे अपनी रसोई की आलमारी के बारे में बताऊँ। हमारे घर में ज़रा सी भी रोटी या चीज़ नहीं है। और क्योंकि मैं तुमको पकड़ कर अपने घर नहीं ले गया तो अब हमारे पास खाने के लिये कुछ भी नहीं है।"

मछली ने अपनी पूँछ पानी में फटकारी और बोली — "जाओ मछियारे घर जाओ, मुझे अपना वायदा याद है।"

इससे पहले कि मछियारा आगे कुछ बोलता उस मछली ने अपनी पूँछ पानी में फिर से फटकारी और पानी में गायब हो गयी।

मछियारे को अपने घर तक आने का रास्ता बहुत लम्बा लगा। वह सोचता आ रहा था — "क्या मैं एक ही दिन में दो बार बेवकूफ बन गया? सुबह भी मैं खाली हाथ चला गया और अभी भी खाली हाथ ही जा रहा हूँ।"

पर उसके सारे शक घर पहुँच कर दूर हो गये जब उसने अपनी पत्नी के चेहरे पर हँसी देखी।

उसको देखते ही वह चिल्लायी — "प्रिये, देखो हमारी आलमारी खाने से भर गयी है। मैंने तो इतनी सारी रोटी और चीज़ कभी अपनी ज़िन्दगी में नहीं देखी। आओ खाना खायें।"

खाने के लिये आज बहुत सारी चीज़ें थीं। बूढ़े मछियारे ने अपनी पत्नी को इतना खुश कभी नहीं देखा था। उसको इतना खुश देख कर वह भी बहुत खुश हो गया।

पर इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं कि वे लोग रोज रोज वही रोटी और चीज़ खाते खाते थक गये। एक दिन उसकी पत्नी चिल्लायी — "प्रिये, तुमको कुछ और अच्छा इनाम मॉगना चाहिये था।"

बूढ़ा मछियारा बोला — "तुम कहना क्या चाहती हो? हमारे पास तो अभी भी बहुत सारी रोटी और चीज़ कई दिनों के लिये रखी है। हमारे पास तो इतना सारा खाना तो पहले कभी भी नहीं था।"

पत्नी फिर भी बोली — "पर तुमको कुछ और ज़्यादा मॉगना था। अपने घर की तरफ तो देखो ज़रा। कैसा सूअरखाना लगता है और तुमने केवल रोटी और चीज़ ही मॉगी उससे।"

मछियारा बोला — "पर तुमने केवल रोटी और चीज़ ही तो मॉगने के लिये कहा था।"

पत्नी बोली — "पर अब मैं तुमसे उस सुनहरी मछली से वह चीज़ मॉगने के लिये कहना चाहती हूँ जो तुमको सबसे पहले मॉगनी चाहिये थी। अब तुम वापस जाओ और उससे एक बहुत अच्छा सा घर मॉगो।" सो उसने वही किया।

एक बार वह फिर समुद्र की तरफ चल दिया। एक बार फिर वह अपने मुॅह पर दोनों हाथों से प्याला बना कर चिल्लाया — "ओ सुनहरी मछली, मेरी पत्नी की दूसरी इच्छा पूरी कर दो।"

एक बार फिर मछली पानी से बाहर आयी। उसका शरीर पहले की तरह से चमक रहा था। वह आ कर फिर से मछियारे के पैरों के पास पड़ गयी।

वह बोली — "मैंने तुमसे वायदा किया था और वह सच्चा था। बोलो मैं तुम्हारी कौन सी दूसरी इच्छा पूरी करूँ?"

"मेरी पत्नी ने कहा है कि मैं तुमसे कहूँ कि हमारा घर किसी सूअरखाने से कम नहीं है। उसका कहना है कि मैंने तुमसे केवल रोटी और चीज़ माँग कर गलती की। सबसे पहले मुझे तुमसे यह घर ही माँगना चाहिये था।"

एक बार फिर मछली ने अपनी पूँछ पानी में फटकारी और एक बार फिर वह बोली — "अब ओ मछियारे तुम घर जाओ। मैंने तुम्हारी इच्छा पूरी की।"

और इससे पहले वह मछियारा कुछ और कहता उस सुनहरी मछली ने फिर से अपनी पूँछ फटकारी और फिर से पानी में कूद कर गायब हो गयी।

इस बार मछियारे को अपने घर का रास्ता लम्बा नहीं लगा क्योंकि अब मछियारे को मछली की बात पर विश्वास था।

उसको पता था कि उसके लिये एक अच्छा सा मकान उसका इन्तजार कर रहा होगा पर उसको इतना अन्दाजा नहीं था कि उस को इतना बढ़िया मकान मिलेगा जितना बढ़िया मकान उस सुनहरी मछली ने उसे दिया था।

उसकी पत्नी तो उस बड़े मकान से बहुत ही खुश थी। वह अपने पति के स्वागत के लिये तुरन्त ही बाहर निकल कर आयी। अपनी पत्नी को इतना खुश देख कर वह खुद भी बहुत खुश हुआ।

पर पिछली बार की तरह से कुछ ही दिन में उसकी पत्नी उस बड़े मकान से ऊब गयी।

एक दिन वह कराहती हुई सी बोली — "मुझसे इतने बड़े घर की सफाई नहीं होती। हमारे पास खाने के लिये तो बहुत कुछ है पर बाकी का सारा समय तो मेरा इतने बड़े घर की सफाई करने में ही निकल जाता है।"

बूढ़ा मछियारा बोला — "पर यही तो तुम चाहती थीं।"

"और यह तुम्हारी गलती है कि तुमने मुझे सोचने का मौका ही नहीं दिया। मुझे अब पता चला है कि मुझे सचमुच में क्या चाहिये था। तुम उस सुनहरी मछली के पास फिर जाओ और अबकी बार उससे ठीक से इनाम मॉग कर लाओ।"

बूढ़ा मछियारा बोला — "मुझे डर लगता है कि अबकी बार तुम पता नहीं क्या मॉगोगी।"

पत्नी बोली — "अरे यह तो बड़ी आसान सी बात है। मछली के पास वापस जाओ और उससे कहना कि मैं अब रानी बनना चाहती हूॅ। मुझे एक महल चाहिये जिसमें बहुत सारे नौकर नौकरानियॉ हों, बहुत सारे। जाओ और इस बार ठीक से ले कर आओ।"

और फिर उसने वही किया। तीसरी बार वह मछियारा समुद्र की तरफ चल दिया। तीसरी बार वह अपने मुँह पर दोनों हाथों से प्याला बनाकर चिल्लाया — "ओ सुनहरी मछली, मुझे इनाम दो मेरी पत्नी की इच्छा पूरी कर दो।"

एक बार वह मछली फिर पानी से बाहर आयी। उसका शरीर पहले की तरह से चमक रहा था। वह आ कर फिर से मछियारे के पैरों के पास पड़ गयी।

वह बोली — "मैंने तुमसे वायदा किया था और वह वायदा सच्चा था। बोलो मैं तुम्हारी कौन सी दूसरी इच्छा पूरी करूँ?"

मछियारा बोला — "मेरी पत्नी कहती है कि मैंने उसको इनाम के बारे में ठीक से सोचने का समय नहीं दिया। अब उसको एक महल चाहिये जिसमें बहुत सारे नौकर नौकरानियाँ हों और वह देश की रानी हो।"

तीसरी बार मछली ने अपनी पूँछ पानी में फटकारी और बोली — "ओ मछियारे, अब तुम घर जाओ। मैं अपना वायदा निभाती हूँ।"

इससे पहले कि मछियारा कुछ कहता वह सुनहरी मछली फिर से पानी में कूद कर गायब हो गयी।

इस बार मछियारा अपना सिर हिलाता हुआ और यह सोचता हुआ अपने घर आ रहा था — "मछली ने अभी तक तो अपना वायदा निभाया है। जब भी मैंने उससे बात की है उसने मेरी हर

इच्छा पूरी की है। पर अबकी बार न जाने मुझे क्या देखने को मिलेगा।"

मछियारे का सोचना ठीक ही था पर यकीनन एक महल वहाँ मौजूद था, बहुत सारे नौकर और नौकरानियाँ भी इधर उधर आ जा रहे थे।

बीच में एक बड़े से कमरे में एक सिंहासन पर शाही पोशाक पहने और सुनहरा ताज लगाये उसकी पत्नी रानी बनी बैठी थी और मछियारे की तरफ नफरत भरी निगाह से देख रही थी।

वह बोली — "ओ बूढ़े मछियारे, यह शाही महल है जो बहुत बढ़िया गहने, सोना और खजाने से भरा है। तुम तो ऐसा लगता है कि किसी सूअरखाने से आये हो। तुम मेरे महल के नहीं हो सकते। जाओ अपने साथ रहने के लिये कुछ सूअर ढूँढ लो।"

वह बूढ़ा मछियारा मुस्कुराया और सोचा — "कम से कम सूअर तुम्हारे जैसी कोई माँग नहीं करते। कोई उस सूअर से ज़्यादा खुश नहीं जो कीचड़ में रहता है।"

इसमें भी कोई आश्चर्य की बात नहीं कि वह बूढ़ी रानी बहुत जल्दी ही उस सब ऐशो आराम से भी उकता गयी।

एक दिन उसने अपने नौकरों को अपना पति ढूँढने के लिये भेजा। हालाँकि कोई भी नौकर अपने नये कपड़ों पर कीचड़ लगाने को तैयार नहीं था पर यह भी सच था कि कोई रानी को नाराज भी

नहीं करना चाहता था इसलिये वे सब रानी के पति को ढूँढने चल दिये।

मछियारा मिल गया तो उस मछियारे को उसके सूअरखाने से महल में लाया गया। उसको नहलाया धुलाया गया पर फिर भी नौकरों ने रानी की चीख सुनी — “यह सब तुम्हारी गलती है।”

बूढ़े मछियारे ने पूछा — “तुम्हारा मतलब क्या है, मेरी रानी?”

रानी बोली — “मेरा मतलब यह है कि मेरा राज्य काफी बड़ा नहीं है। तुम उस मछली के पास फिर से जाओ और उससे कहो कि मैं समुद्र की भी रानी होना चाहती हूँ। मैं चाहती हूँ कि सारी मछलियाँ मेरे आगे सिर झुकायें।”

बूढ़ा बोला — “मुझे यकीन नहीं है कि वह सुनहरी मछली तुम्हारी यह प्रार्थना मान लेगी।”

रानी बोली — “यह प्रार्थना नहीं है यह तो शाही फरमान है।”

“जैसी तुम्हारी इच्छा, मेरी रानी।”

और उसने वैसा ही किया। सो चौथी बार फिर वह समुद्र की तरफ चल दिया। एक बार फिर वह अपने मुँह पर दोनों हाथों से प्याला बना कर चिल्लाया — “ओ सुनहरी मछली, मुझे इनाम दो। मेरी पत्नी ने अपनी शाही इच्छा बदल दी है।”

पर इस बार कोई सुनहरी मछली पानी में से बाहर नहीं आयी। सो एक बार फिर से उसने अपने मुँह पर अपने दोनों हाथों का प्याला बनाया और चिल्लाया — “मुझे इनाम दो, ओ मेरी सुनहरी

मछली, मेरी पत्नी ने अपनी शाही इच्छा बदल दी है वह इस नीले समुद्र के ऊपर राज करना चाहती है... ।"

पर कोई चमकीला शरीर पानी के बाहर नहीं आया।

उसने एक बार फिर अपने मुँह पर अपने दोनों हाथों का प्याला बनाया और चिल्लाया —

"मुझे इनाम दो, ओ मेरी सुनहरी मछली, मेरी पत्नी ने अपनी शाही इच्छा बदल दी है वह इस नीले समुद्र के ऊपर राज करना चाहती है... तुम पर भी।"

इस बार मछियारे को कोई आश्चर्य नहीं हुआ जब पानी में से कोई छपाक की आवाज नहीं आयी। उसको लगा उसने दूर कहीं सुनहरी पूँछ पानी में देखी जो तुरन्त ही गायब हो गयी।

बेचारा मछियारा वापस महल चला आया। वह सोच रहा था कि आज उसकी पत्नी बहुत गुस्सा होगी और भी न जाने क्या क्या होगा।

महल आने के बाद तो उसने वह देखा जिसको वह सोच भी नहीं सकता था। वहाँ न तो कोई महल था, न कोई नौकर चाकर इधर उधर घूम रहे थे। न वहाँ कोई सिंहासन था न कोई ताज, न कोई रोटी थी और न ही कोई चीज़।

वहाँ तो केवल उसका पुराना वाला घर था जो वाकई किसी सूअरखाने से ज़्यादा अच्छा नहीं था और उस घर के सामने खड़ी थी उसकी पत्नी।

वह उसको देखते ही चिल्लायी — “ओ आलसी मछियारे, तुम क्या सोचते हो कि तुम क्या कर रहे हो? क्या तुम घर बिना खाना लिये लौट रहे हो? मैंने रानी की तरह के कपड़े नहीं पहन रखे हैं तो क्या हुआ पर तुम्हारी रानी तो मैं अभी भी हूँ।

तुम अभी अभी वापस जाओ और शाम के खाने के लिये मछली ले कर आओ।” और अब मछियारा मुस्कुरा दिया।

List of Stories of “Folktales of North America-1”

List of Stories of “Folktales of North America-2”

1. Lazy Jack
2. Soap, Soap, Soap
3. Gunny Wolf
4. Journeycake Who Ran Away
5. How Man Became Master of Fire
6. Cricket's Dinner
7. Yahula
8. Why Cats and Dogs Never Get Along
9. Wings on Her Feet
10. The Magic Orange Tree
11. The Smartest Man in All the World
12. Ti Malice
13. Wheeeeeeai
14. Half a Chick
15. The Golden Voice of Poas
16. The Golden Fish

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022